वर्ष : ४
अंक : २४
मई - जून १९९४

ऋषि प्रसाद

द्विमासिक

सदैव
सम और
प्रसन्न रहना
ईश्वर की
सर्वोपरि
भक्ति है ।

पूज्यपाद संत श्री
आसारामजी बापू

वर्ष : ४
अंक : २४
मई-जून १९९४

तंत्री : के. आर. पटेल

शुल्क वार्षिक : रू. २५/-
आजीवन : रू. २५०/-

परदेश में वार्षिक : US$ १५ (डॉलर)
आजीवन : US$ १५० (डॉलर)

कार्यालय :
'ऋषि प्रसाद'
श्री योग वेदान्त सेवा समिति
संत श्री आसारामजी आश्रम
साबरमती, अहमदाबाद-३८० ००५.
फोन : ४८६३१०, ४८६७०२.

परदेश में शुल्क भरने का पता :
International Yoga Vedanta Seva Samiti
8 Williams Crest,
Park Ridge, N. J. 07656 U.S.A.
Phone : (201) - 930 - 9195

टाईपसेटींग : पूजा लेसर पॉईन्ट

प्रकाशक और मुद्रक : श्री के. आर. पटेल
श्री योग वेदान्त सेवा समिति,
संत श्री आसारामजी आश्रम, मोटेरा, साबरमती,
अहमदाबाद-३८० ००५ ने
भार्गवी प्रिन्टर्स, राणीप, अहमदाबाद में
छपाकर प्रकाशित किया ।

अनुक्रम

'ऋषि प्रसाद' हर दो महीने में ९ वीं तारीख को प्रकाशित होता है ।

कार्यालय के साथ पत्रव्यवहार करते समय अपना रसीद क्रमांक एवं स्थायी सदस्य क्रमांक अवश्य बतायें ।

सुभाषित सौरभ

गुरु-वन्दना

बदली बदली दुनिया है मेरी ।
इन श्रीचरणों में आने से ।
जीवन की ज्योति जगी मेरी ।
प्रभु आपकी गाथा गाने से ॥
तुम मेरे प्रभु अपराध क्षमा करो ।
जो अनजाने में हो जाते हैं ।
हम नादानी में खो जाते हैं ।
और दीन-दुःखी हो जाते हैं ॥
कर दो हम पर अमृत-वर्षा ।
दीप ज्ञान का जलवा कर ।
जब तक साँस रहे तन में ।
राम का नाम जपें मन में ॥
गुरु चरणों में प्रीत बढ़े ।
ऐसी कृपा कर दो हम पर ॥

- प्रमीला गुप्ता (प्रिन्सीपाल)
जैन हायर सेकण्डरी स्कूल, रतलाम (मध्य प्रदेश)

वो बंदा रास्ता पाता है ...

गुरु का दर्शन फल देता है ।
मन को पाक[1] बनाता है ।
छू कर उनके चरणों को ।
सब चाल-चलन धुल जाता है ॥
रहकर उनकी संगम में ।
जो खालिक[2] के गुण गाता है ।
पाक खुदा की दरगाह[3] का ।
वो बंदा[4] रास्ता पाता है ॥
कामिल सद्गुरु[5] का मंत्र ।
ला फानी[6] कहलाता है ।
अमृत उनकी आंखों का ।
सज्जन को संत बनाता है ॥
गुण उनके बे-अंत हैं भाई ।
मूल न उनका पायेंगे ।
अपने साथ मिलायें उनको ।
जो जो उनको भायेंगे ॥

१. पवित्र २. परमात्मा ३. धाम ४. साधक ५. सत्पुरुष ६. अमर ।

गुरु और कोई नहीं हैं अपितु साधक की उन्नति के लिए विश्व में अवतरित परात्पर जगज्जननी दिव्य माता स्वयं ही हैं । उनकी अथक सेवा करो । वे स्वयं ही आप पर दीक्षा के सर्वश्रेष्ठ आशीर्वाद बरसाएँगे । ***- स्वामी शिवानंद***

चिन्तन के लिए दिशाबोध

जब तक हिन्दू भयाक्रान्त रहेंगे, झगड़े होते ही रहेंगे । जहाँ कायर निवास करते हों, वहाँ गुण्डे अवश्य रहेंगे । हिन्दुओं को यह बात गाँठ बांध लेनी चाहिए कि यदि वे स्वयं भयभीत होते रहेंगे तो उनकी रक्षा कोई नहीं कर सकता । मनुष्य के अन्दर भय यह सिद्ध करता है कि उसे (कर्म सिद्धान्त) ईश्वर में भरोसा नहीं है । हिन्दू को इन दो गुणों में से एक गुण तो अपने पास रखना ही चाहिए । या तो ईश्वर में विश्वास या फिर अपनी ताकत में विश्वास । यदि उनके पास इन दो में से एक भी नहीं है तो वह अपने समाज के विनाश के लिए उत्तरदायी होगा ।

- महात्मा गांधी

विवेक जगाओ

बिनु सत्संग विवेक न होई ।
रामकृपा बिनु सुलभ न सोई ॥

जिसके जीवन में विवेक नहीं उसका जीवन नश्वर भोगों के पीछे खत्म हो जाता है, बरबाद हो जाता है और अंत में कुछ भी हाथ नहीं लगता । तब वह पछताता है । मनुष्य को चाहिए कि अपनी विवेकदृष्टि सदा जागृत रखकर सफल जीवन जीने का यत्न करे । विवेकी आदमी कोई भी ऐहिक चीज-वस्तु या परिस्थिति में उलझेगा नहीं । धन हो, सत्ता हो, सामर्थ्य हो, मित्र-परिवार हो, सर्व प्रकार का ऐहिक सुख हो पर विवेकी आदमी उससे चिपककर नहीं बैठेगा, उसका उपयोग भर करेगा । लेकिन मूर्ख आदमी धन, सत्ता, मित्र-परिवार आदि में अन्धा होकर लगा रहेगा । फिर अंतकाल में पछताएगा।

एक सौभाग्यशाली आदमी था । उसने जीवन में भौतिक सुविधाएँ बहुत पायी थी लेकिन वह उसमें गरकाव नहीं हुआ था । उसने अपनी विवेकदृष्टि गँवायी नहीं थी इसलिए वह उसमें उलझा नहीं था । उस सौभाग्यशाली ने जीवन के रहस्य को जानना चाहा । उसे हरदम यही आकाँक्षा रहती थी कि जीवन का सत्यस्वरूप जान लूँ । मैं स्व का छंद पा सकूँ तो ही जीवन सफल है। आज तक बाहर के सुखों पर निर्भर जिंदगी बिताई है । अब तो भीतर के सुख का द्वार खुल जाए ।

भीतर के सुख को पाने की इच्छा में वह घूमता-घामता तीर्थों में गया । उसे पुण्यलाभ तो हुआ मगर परमात्मलाभ न हुआ । उसने यज्ञ किये, याज्ञिक हुआ, भविष्य में स्वर्ग मिलने की आशा हुई लेकिन शांति नहीं मिली । खाया-पिया-घूमा पर उसे भीतर का आनंद नहीं मिला । उस आनंद की खोज में इधर-उधर घूमते कोई जिज्ञासु सज्जन मिले ।

> **मनुष्य को चाहिए कि वह अपनी विवेकदृष्टि सदा जागृत रखकर सफल जीवन जीने का यत्न करें ।**

उस जिज्ञासु सज्जन ने कहा : ''मैं तुम्हें ऐसे संत के पास भेजता हूँ जिनसे मुझे कुछ मिला है, मैं कुछ पाकर आया हूँ । वे संत ऐसे हैं कि उनके पास कोई मंदिर या मस्जिद नहीं है, संप्रदाय का कोई चिह्न नहीं है । न तुम उन्हें गृहस्थी कह पाओगे, न ब्रह्मचारी, न संन्यासी । धैर्य रखना । हमें वहाँसे बहुत कुछ मिला है । तुम जो चाहते हो वह वहाँसे मिलेगा । तुम उनके पास चले जाओ ।''

वह आदमी उन आत्ममस्त संत के पास गया । उस समय वे संत गड्ढा खोद रहे थे । जोर-जोर से जमीन में गेंती मारकर मिट्टी निकाल रहे थे ।

जिज्ञासु ने कहा : ''महाराज ! मैंने आपकी खूब प्रशंसा सुनी है । भीतर का सुख पाने के लिए मैं कई तीर्थों में घूमकर आया, यज्ञ, दान, पुण्य आदि भी खूब किये, कई संप्रदायवालों से मिलकर भी आया हूँ । पर मुझे भीतर का सुख नहीं मिला है । मुझे किसीने बताया है कि ध्यान से भीतर के सुख के द्वार खुलेंगे । महाराज! आपसे मुझे ध्यान सीखना है ।''

उन आत्ममस्त संत ने कहा : ''मैं ध्यान कर रहा हूँ । गौर से देख, यह भी ध्यान है ।''

वह आदमी चकराया कि गड्ढा खोदने में ध्यान !

वे संत तो एक के बाद एक गड्ढे खोदते गये । उन्होंने दस-बारह गड्ढे खोद लिए । वह आदमी तो परेशान हो गया ।

वह कहने लगा : '' महाराज ! मैं गड्ढा खोदना सीखने के लिए नहीं आया हूँ । मैं ध्यान सीखने के लिए आया हूँ ।''

संत बोले : ''तू ईमानदारी से मुझे देख। मैं ध्यान करता नहीं, मैं ध्यान सीखाता नहीं, मैं स्वयं ध्यान हूँ। जब तक 'मैं' था, तब तक बहुत कुछ करना पड़ता था। जब 'मैं' हटा तो ध्यान के सिवा कुछ बचा भी नहीं। 'मैं' था तब तक ध्यान भी करना पड़ता था, अब तो मैं स्वयं ध्यान हूँ। तू मुझे ध्यान से देखेगा तो तेरा ध्यान हो जाएगा।''

वे संत तो कभी घूमें, कभी नाचें, कभी बच्चों के साथ खेलें, कभी तो बड़ी गहन रहस्यपूर्ण बातें करने लगें, कभी अबोध बालक की तरह बोलने लग जायें। एक दिन में ही उस आदमी का जी भर गया कि मैं कहाँ आ पहुँचा !

दूसरे दिन सुबह हुई। उसने संत से कहा : ''महाराज ! कृपा करें, मैं आपके पास ध्यान सीखने के लिए आया हूँ। मुझे ध्यान सिखाइये।''

संत ने कहा : ''अरे पागल ! चौबीस घंटे मेरे साथ रहा, तूने ध्यान नहीं सीखा ?''

उस जिज्ञासु आदमी ने कहा : ''आपको मैंने घूमते, खाते, स्नान करते, गड्ढे खोदते, बच्चों के साथ खेलते देखा, पर आपको ध्यान करते देखा ही नहीं।''

संत ने कहा : ''भाई ! मैं कसम खाकर कहता हूँ कि मैं एक क्षण भी ध्यान के बगैर नहीं रहा।''

हँसिबो खेलिबो धरिबो ध्यान।
अहर्निश कथिबो ब्रह्मज्ञान।
खावे पीवे न करे मनभंगा।
कहे नाथ मैं तिसके संगा॥

जिस दिन से मैंने गुरु की पूर्ण कृपा हजम की, उस दिन से मैंने कभी ध्यान के लिए अभ्यास किया ही नहीं - ध्यान सहज हो गया। प्रारंभ में तो चित्त में बहुत उथल-पुथल होती थी लेकिन अब देखो तो कुछ नहीं। सब मिट गया।''

जिस दिन से मैंने गुरु की पूर्ण कृपा हजम की, उस दिन से मैंने कभी ध्यान के लिए अभ्यास किया ही नहीं। ध्यान सहज हो गया।

वह आदमी बोला : ''महाराज ! आपकी बातें तो ठीक हैं पर मुझे तो ध्यान सीखना है।''

महाराज ने कहा :''ध्यान तो तुझे क्या सिखाऊँ ! मैं तो चाहता हूँ कि तू सीधा जाग जा। यह जरूरी नहीं कि मैं चार साल में जगा तो तुझे भी चार साल में जगाऊँ। परीक्षित सात दिन में जाग गया। खटवाँग एक मुहूर्त में जाग गया। कहते हैं कि शुकदेवजी जब जन्मे तब से वैराग्यवान थे। जन्म के इक्कीस दिन बाद वे अपनी आत्मा में जग गये।

बुद्ध ने भी पहले तो बहुत कुछ किया लेकिन जब जगे तो एक क्षण में बुद्धत्व को उपलब्ध हो गये। अष्टावक्र, जब माता के गर्भ में थे तब से जगे थे। उन्होंने जनक को घोड़े के रकाब में पैर डालते-डालते जगा दिया। तू भी श्रद्धा रख और मुझे देख।

कोई इक्कीस साल में जगे या पच्चीस साल में जगे। पच्चीस सेकंड में भी जगे। उसके लिए कोई निश्चित समयसीमा नहीं हो सकती।''

वह बोला :''महाराज ! आपमें मेरी श्रद्धा है इसलिए तो आपसे ध्यान सीखने आया हूँ।''

संत की बात वे ही समझ सकते हैं जिनमें श्रद्धा होती है, कुछ ऊँची समझ होती है और ज्ञान पाने के लिए तत्पर हैं, अपनी मान्यताओं को छोड़ने के लिए राजी हैं।

संत ने कहा :''मैं जो करता हूँ वह ध्यान है। इस बात को तू ठीक से जान ले, बस !''

उस आदमी ने दूसरे दिन देखना शुरू किया कि संत कब और कैसे ध्यान करते हैं।

उसने देखा कि कभी तो बैठे हैं कभी किताब पढ़ रहे हैं, कभी बच्चों के साथ खेल रहे हैं, कभी विचार विमर्श कर रहे हैं। चेहरे पर कोई गंभीरता नहीं, ध्यान की प्रगाढ़ता नहीं। अहर्निश सहज

आनंद छलकता था ।

लेकिन संत की यह अवस्था उस आदमी की समझ में नहीं आई ।

उसने संत से कहा : ''लोगों ने मुझे आप के पास भेजा था ध्यान सीखने के लिए लेकिन मैं तीन दिन से देख रहा हूँ कि जो आम आदमी करता है, वही आप करते हो । आप हमारी तरह ही जीवन जीते हो । आपमें और हम में मुझे तो कोई फर्क नहीं लगता ।''

जो बेफर्क में पहुँचे नहीं हैं, वे बेफर्कवाले आदमी को पहचान नहीं सकते ।

उसने कहा : ''बाबाजी ! मुझे तो पता नहीं चलता है कि आप क्या कह रहे हैं, क्या कर रहे हैं ।''

संत ने कहा :''तू कुछ समझना चाहता है, यहाँ रुकना चाहता है तो रुक सकता है और जाना चाहे तो जा सकता है । पर मैं जो कहता हूँ वह सत्य है कि मैं जो कुछ करता हूँ वह ध्यान है ।''

वह आदमी एक दिन और रुका । उसने देखा तो वही की वही बात । वह कुछ समझ न सका । संत की बात वे ही समझ सकते हैं जिनमें श्रद्धा होती है, कुछ ऊँची समझ होती है और ज्ञान पाने के लिए तत्पर हैं, अपनी मान्यताओं को छोड़ने के लिए राजी हैं । अपनी अक्ल से जो परमात्मा को पाने का आग्रह रखेंगे वे सफल नहीं हो सकेंगे । कृष्ण ने भी गीता में कहा है :

सर्वधर्मान्परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज ।

'सब धर्मों को छोड़कर तू मेरी शरण आ जा ।'

भगवान कहते हैं कि सब मान्यताओं को तिलांजलि देकर जहाँ से 'मैं' उठती है वहाँ स्थिति करना ही मेरी शरण आना है ।

आत्मनाद

नहीं मैं जलूँगा, नहीं मैं मरूँगा ।
नहीं मैं हटूँगा, नहीं मैं कटूँगा ।
मुझे आग-पानी, न कुछ कर सकेंगे ।
अजर मैं अमर हूँ नहीं नाश मेरा ॥१॥

सदा जो मरा है, मरा है शरीरा ।
नहीं मैं जनम में मरण में कि धीरा ।
मुझीको न बन्धन, सदा मुक्त मैं हूँ ।
निराली डगर हूँ नहीं नाश मेरा ॥२॥

कि आशा-निराशा यहाँ कुछ नहीं है ।
न सुख-दुःख के झंझट हताहत नहीं है ।
नहीं चाह कोई, न अरमान जी में ।
वही हूँ वही मैं कि विश्वास मेरा ॥३॥

धरा क्या गगन पर सभी राज मेरा ।
जहाँ पर सुनो हाँ, बने साज मेरा ।
चलूँ साँस पर मैं, बिराजूँ मैं हृदय में ।
इधर क्या उधर भी सदा वास मेरा ॥४॥

सभी बंध तोड़ बना निर्विकारी ।
करी खोज भीतर हुआ रूपधारी ।
सुनूँ मैं सभी को, सभी का पता है ।
भरा मोह-माया रचा रास मेरा ॥५॥

कभी राम बनकर धरा को सुहाई ।
कभी श्याम बनकर कि बंशी बजाई ।
सदा प्रेम प्यासा, पधारा धरा पर ।
कभी लिख सकोगे ये इतिहास मेरा ॥६॥

चिदानंदधारी अलख मैं निराला ।
सदा चाहता मैं भरा प्रेम - प्याला ।
पिलाता सभी को, सदा पी रहा हूँ ।
नहीं काल काटे कभी पाश मेरा ॥७॥
अजर मैं अमर हूँ नहीं नाश मेरा ॥

– **जगदीश मेहता**

ज्ञानी का जीवन

सः तृप्तो भवति सः अमृतो भवति ।
सः तरति लोकान् तारयति ॥

ऐसी गुणातीत, परम आनंद की अवस्था में पहुँचे हुए महापुरुषों का सारा जीवन बहुजनहिताय ही बीतता है । उनका जीवन सहनशीलता, शांति, क्षमा, धैर्य, परोपकार जैसे अनेक सद्‌गुणों की सौरभ से महकता हुआ होता है । ऊँची यात्रा के लिए, अपनी उन्नति के लिए हमें उनके जीवन से बहुत कुछ सीख मिलती है ।

भगवान महावीर के जीवन की कथा में आता है कि महावीर जहाँ कदम रखते थे वहाँ काँटे फूल हो जाते थे, कंकड़-पथ्थर मखमल का काम देते थे । साँप ने काटा तो महावीर के शरीर से साँप को पीने के लिए दूध बहता था । यदि शरीर में से खून की जगह दूध बहता हो तो वह शरीर विज्ञान के नियमों के अनुसार जी नहीं सकता । फिर भी कथा समझाने के लिए है कि उनमें इतनी समता थी, इतनी शांति थी कि साँप ने काटा तो साँप जैसे दूध पीता हो उस तरह रक्त भी पीने दिया गया । उन्हें शरीर की सत्यता का भान ही नहीं रहा ।

शरीर प्रकृति के पाँच भूतों से बनता है और जिन्होंने सत्य को जान लिया उनको शरीर में ममता नहीं रहती । अबदल आत्मा को जान लिया तो परिवर्तनशील शरीर की कोई फिकर नहीं रहती है । महावीर के लिए काँटे फूल बन जाते थे या कंकड़-पत्थर मखमल का काम देते थे, उसका मतलब यह नहीं कि उनके पैर को काँटे चुभते नहीं थे । अगर साधारण आदमी के पैर में काँटे चुभेंगे तो जो कष्ट होगा, अशांति होगी वह दिखाई पड़ेगी । लेकिन जहाँ इतनी तृप्ति और आनंद है, इतना स्व का छंद खिला हुआ है, उस चैतन्य आत्मा की इतनी मस्ती है कि काँटा भी लगे तो आहा ! उस यार की याद, स्वरूप की याद ! इसलिए काँटा या कंकड़ लगा तो भी उसका प्रभाव नहीं दिखता । भीतर की गुणातीत अवस्था का इतना मजा रहा, इतना प्रगाढ़ आनंद रहा कि बाहर का दुःख दुःख नहीं बचा, सुख सुख नहीं बचा । आप जब निद्रा में चले जाते हो तो तमोगुण में होते हो तब भी सुख-दुःख कुछ नहीं रहता है । पर बुद्ध, महावीर, नानक, कबीर आदि ऐसी गुणातीत अवस्था में पहुँचे हैं, जहाँ कोई गुण नहीं है, सुख-दुःख कुछ भी नहीं है ।

शुकदेवजी परीक्षित को कथा सुनाने के लिए जा रहे थे । कई लोगों ने उन्हें मूर्ख और पागल समझा । बच्चों ने उन्हें कंकड़-पत्थर मारे, पर कंकड़-पत्थर से या अपमान से उनका चित्त विचलित नहीं हुआ क्योंकि वे ऐसी जगह पहुँचे थे, जहाँ प्रकृति का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है । ऐसे अविचल आत्मा में उनकी स्थिति थी, जहाँ परिस्थितियों का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है ।

कोई भी महान संत हो, चाहे बुद्ध हो, नानक हो, कबीर हो, महावीर हो, बाहर की परिस्थितियाँ चाहे उनके चित्त को प्रभावित नहीं करती, पर डॉक्टरी नियम सबके शरीर को समान रूप से लागू होता है ।

कहते हैं कि भगवान महावीर ने बारह साल में सिर्फ तीन सौ पैंसठ दिन भोजन किया था । वे कई बार उपवास रखा करते थे । कभी चालीस दिन, कभी पचास दिन, कभी सत्तर दिन तक भी उपवास कर लेते थे । कथा में आता है कि भगवान महावीर

शरीर प्रकृति के पाँच भूतों से बनता है और जिन्होंने सत्य को जान लिया उनको शरीर में ममता नहीं रहती । अबदल आत्मा को जान लिया तो शरीर की फिकर नहीं रहती है ।

पेचिस की बीमारी से पीड़ित होकर मरे। महायोगी, सिद्धयोगी भगवान को पेचिस की बीमारी कैसे हो गई उसका विवरण कथा में नहीं आता है। लेकिन जो प्रकृति के नियमों को जानते हैं, वे इस बात को समझ सकेंगे। शरीर प्रकृति से बना हुआ होता है। महावीर ने बारह साल में केवल बारह महीने ही भोजन किया, तो शरीर चलाने के प्रकृति के जो नियम हैं उनमें खलल पड़ गया और जठर कमजोर हो गई। जठर कमजोर हो जाने से बीमारी होने की संभावना बढ़ जाती है। तो ऐसे महावीर को पेचिस की बीमारी हो गई। मैं यदि ज्यादा बोलूँगा तो गले में उसका असर होगा। अगर ज्यादा खाऊँगा तो शरीर पर उसका असर होगा।

ज्ञान याने पूरी सजगता। वह सजगता ऐसी है जिसमें नश्वर का मूल्य छूट जाता है और ज्ञानी अपने नित्य आनंद स्वरूप आत्मा में रमण करता है।

ज्ञानप्राप्ति के बाद शरीर पर असर न पड़े ऐसी बात नहीं है। यदि शरीर पर असर न पड़े तो वह अवस्था मूर्छा की होगी, ज्ञानी की नहीं। ज्ञान याने पूरी सजगता। वह सजगता ऐसी है जिसमें नश्वर का मूल्य छूट जाता है और ज्ञानी अपने नित्य आनंद स्वरूप आत्मा में रमण करता है।

आत्मानुभव पाने के लिए उत्सुक साधक भी शरीर आदि से सत्यबुद्धि हटाकर अपनी चित्तवृत्तियों को आत्माभिमुख करने का अभ्यास करता है। ऐसे ही एक संन्यासी यहाँ अहमदाबाद के नीलकंठ अखाड़ा (असारवा) में वर्षों पहले रहते थे। उनके गले में कुछ फोड़े जैसा हो गया। दवाखाने में इलाज चल रहा था। पर फायदा नहीं हुआ तो ऑपरेशन करना जरूरी लगा। संन्यासी जहाँ रहते थे वहाँ के महन्त ने संन्यासी के ऑपरेशन के लिए सब साधन लेकर डॉक्टर को वहीं बुला लिया।

वे संन्यासी एकान्त के अभ्यासी थे। अतः शस्त्रक्रिया के समय शरीर में होते हुए भी वे वृतियों को अंतर्मुख करके प्रगाढ़ता में चले गये, इसलिए उन्हें पीड़ा का अहसास नहीं हुआ।

डॉक्टर ने संन्यासी से कहा : ''हम आपको एक इंजेक्शन पहले लगा देंगे, बाद में ऑपरेशन करेंगे जिससे आपको कोई दर्द न होगा।''

संन्यासी ने कहा : ''नहीं, नहीं, इंजेक्शन मत लगाओ। आप ऐसे ही जो करना है करो।''

डॉक्टर ने ऑपरेशन शुरु किया तो देखा कि संन्यासी ने जरा भी उफ नहीं की। न चीख, न चिल्लाना, न कराहना, चेहरे के भावों में जरा भी परिवर्तन नहीं। डॉक्टर ने जरा गहरे में शस्त्रक्रिया चलाई तो भी जरा-सी आवाज भी नहीं। अब डॉक्टर तो ऑपरेशन करके संन्यासी को निरोग करने के बजाय देखने लगा कि अब तो चीखेगा, जरूर चिल्लाएगा। इंजेक्शन लगाने से इन्कार कर रहा था, पर अब इसको पता चलेगा कि कैसी पीड़ा होती है। ऐसा करते-करते उसने संन्यासी को सदा के लिए रवाना कर दिया पर वह दुःखी न कर सका क्योंकि वे ऐसी निर्दुःख अवस्था में पहुँचे थे जहाँ शरीर की सत्यता का भान ही गायब था।

अगर किसी तत्त्ववेत्ता को ऐसा कुछ हुआ और नस्तर रखा तो वह चीखेगा, चिल्लाएगा-ऐसा भी हो सकता है। क्योंकि उस समय वह तत्त्ववेत्ता शरीर में होगा तो चेहरे पर दुःख की रेखाएँ दिख सकती हैं। वे संन्यासी एकान्त के अभ्यासी थे। तो शस्त्रक्रिया के समय शरीर में होते हुए भी वे वृत्तियों को अंतर्मुख करके प्रगाढ़ता में चले गए, इसलिए उन्हें पीड़ा का अहसास नहीं हुआ। कोई तत्त्ववेत्ता-जीवन्मुक्त महापुरुष प्रगाढ़ता से शरीर में आएँ, उनकी अंतर्मुख वृत्तियाँ बहिर्मुख हो तो उस समय पीड़ा हो (अनु. पेज १० ऊपर)

धारणाशक्ति का विकास

पुराणों में एक कथा आती है :

एक ब्राह्मण को धन पाने की इच्छा हुई । धन पाने के लिए वह होम-हवन करने लगा । देवताओं को प्रसन्न करने के प्रयत्न में लगा । लेकिन कोई देव प्रसन्न नहीं हुए ।

ब्राह्मण ने सोचा कि मैं ऐसे देव की आराधना करूँ कि आज तक किसीने न की हो । वह यज्ञानुष्ठान करने लगा । तब आकाश में मेघ के देवता कुण्डधार ने प्रकट होकर उसे दर्शन दिये । उन्होंने ब्राह्मण से कहा : ''माँग, तुझे क्या चाहिए ?''

वह ब्राह्मण बोला : ''प्रभु ! मुझे धन पाने की इच्छा हुई है और मेरा जिसमें कल्याण हो वह आप कीजिए ।''

कुण्डधार तो पानी के सिवाय कुछ दे नहीं सकते थे। अतः उन्होंने दूसरे देव का आवाहन किया । तब यक्षशिरोमणि मणिभद्र प्रकट हुए ।

कुण्डधार ने यक्ष से कहा : ''मेरा यह जो भक्त है उसने मेरी बहुत आराधना की है । उसे धन पाने की इच्छा है तो आप उसे संतुष्ट कीजिए ।''

मणिभद्र ने कहा : ''मैं यक्ष हूँ । मेरे पास धन की कोई कमी नहीं है । उसे जितना धन चाहिए वह ले जाए ।''

मेघ के प्रतीक कुण्डधार ने कहा : ''जिसमें उसका कल्याण हो वह भी करना है । हे देवश्रेष्ठ ! आप वही कीजिए, जिसमें उसका कल्याण हो ।''

मणिभद्र ने सोचा कि कल्याण तो तब होगा, जब इसकी बुद्धि धर्म में प्रवृत्त होगी । अगर इसकी बुद्धि में विवेक और वैराग्य पैदा हो जाए, अगर इसकी बुद्धि आत्मा की ओर चल पड़े तो इसका परम कल्याण हो सकता है ।

धन से कल्याण होता तो बड़े-बड़े धनवान नरक में क्यों पड़ते । धन से कल्याण होता तो कंस और रावण के पास भी तो धन था । लेकिन जब तक बुद्धि धर्म में नहीं लगती, आत्मा की ओर नहीं आती तब तक आदमी का कल्याण नहीं होता ।

'आज के बाद इसकी बुद्धि धर्मपरायण हो जाएगी' यह वरदान देकर यक्ष अंतर्धान हो गये ।

कुछ समय के बाद ब्राह्मण को स्वप्न आया कि उसके आसपास मृत आदमी के कफन पड़े हैं । उसको हुआ कि जो अच्छे-अच्छे कपड़े पहनकर, सज-धजकर घूमते थे, अपने को चतुर और होशियार मानते थे, अपने को मैं-मैं, कहकर क्षुद्र व्यवहार में ही दिन-रात लिपट रहे थे, उन्हें भी आखिर तो कफन का ही साथ मिला है। संसार की यह स्थिति देखकर उस ब्राह्मण को वैराग्य हुआ ।

संसार से वैराग्य होने लगता है, तो परमात्मा में अपने आप राग होने लगता है । हमारी वृत्ति में नश्वर चीजों का आकर्षण मिटने लगता है तो शाश्वत की खबरें आने लगती हैं । ज्यों शाश्वत की खबरें आने लगती हैं, त्यों शाश्वत की सत्ताएँ भी प्रकट होने लगती हैं ।

ब्राह्मण जंगल में चला गया एकांत में । कंदमूल खाये, झरने का निर्मल पानी पिये, प्रभु का चिंतन करे । सुबह नींद से उठे तो थोड़ी देर शांत हो जाये । एकांत में, नैसर्गिक वातावरण में उसकी चंचलता धीरे-धीरे मिटने लगी । बुद्धि का विकास होने लगा । कुछ ही दिनों में उसने चित्त का प्रसाद पा लिया ।

एकांतवासो लघुभोजनादि
मौनं निराशा करणावरोधः ।
मुनेरसो संयमनं षडेते
चित्तप्रसादं जनयन्ति शीघ्रम् ॥

आद्यशंकराचार्य ने कहा है कि 'एकांतवास हो, अल्प आहार हो, इन्द्रियों का मौन हो तो उसका निग्रह होने से आदमी चित्त के प्रसाद को पा लेता है ।''

संसार से वैराग्य होने लगता है, तो परमात्मा में अपने आप राग होने लगता है । हमारी वृत्ति में नश्वर चीजों का आकर्षण मिटने लगता है तो शाश्वत की खबरें आने लगती हैं ।

हमारे पास शक्तियाँ बहुत हैं, लेकिन उसका उपयोग सही ढंग से नहीं होता है। देखने के द्वारा, सूँघने के द्वारा, सुनने के द्वारा, स्वाद के द्वारा, राग-द्वेष के द्वारा हमारी आत्मा की शक्ति बिखर जाती है। उसका दुरुपयोग हो जाता है। हम अपनी महिमा से च्युत हो जाते हैं, गिर जाते हैं। पाशवी वृत्तियों में हमारा समय, हमारी शक्ति नष्ट हो जाती है। इसलिए हम आत्मा होते हुए भी दीन-दुःखी, दया के पात्र हो जाते हैं। प्रकृति हमें जैसा चलाती है वैसे ही हम चलते हैं और प्रकृति के आधीन पशुओं की तरह ही हमारा जीवन व्यतीत हो जाता है।

हम अपनी महिमा से च्युत हो जाते हैं, गिर जाते हैं। पाशवी वृत्तियों में हमारा समय, हमारी शक्ति नष्ट हो जाती है। इसलिए हम आत्मा होते हुए भी दीन-दुःखी, दया के पात्र हो जाते हैं।

उस ब्राह्मण ने अपने आपको पाशवी वृत्तियों से बचाया। उसने स्वप्न में कफन देखे और उसका वैराग्य जाग उठा। जंगल में जाकर वह धारणा-ध्यान-जप आदि करने लगा। जप-ध्यान-धारणा से उसमें शक्ति का संचार होने लगा। तुम भी जप-धारणा-ध्यान करो तो तुम में भी शक्ति का संचार होने लगेगा। एक सप्ताह जो मौन-मंदिर में बैठते हैं उन्हें भी लगता है कि मनोबल का विकास हुआ है। चार-छः महीने या चालीस दिन ही कोई प्रयोग करे तो उसके अंदर बहुत-कुछ संभावना है, जिसके प्रकट होने से वह अपने कर्मों को काट सकता है। दुःख, तनाव, अशांति को सुख-शांति में बदल सकता है। आप आध्यात्मिक मार्ग में हो और आपको कोई परेशान करता हो तो प्रकृति उसकी खबर ले लेती है। जैसे धोबी कपड़े को धोता है, वैसे ही प्रकृति उसको ठीक कर देती हैं। यह सब शक्तियाँ तुम्हारे अंदर हैं। लेकिन भीतर की शक्तियों पर विश्वास नहीं है, भरोसा नहीं है। बाह्य उपचार, बाह्य साधन और बाह्य व्यक्तियों का अवलंबन लेकर अपनी सुरक्षा चाहते हैं ऐसे लोगों का कोई ठिकाना नहीं होता।

आप आध्यात्मिक मार्ग में हो और आप को कोई परेशान करता हो तो प्रकृति उसकी खबर ले लेती है। जैसे धोबी कपड़े को धोता है, वैसे ही प्रकृति उसको ठीक कर देती है।

नरेन्द्र (स्वामी विवेकानंद)का मित्र कालू था, वह बहुत से देवी-देवताओं की पूजा किया करता था। नरेन्द्र को यह ठीक नहीं लगता था। वे उसे बार-बार समझाते थे। लेकिन कालू उनकी एक नहीं मानता था।

नरेन्द्र एकांत कमरे में नियम से धारणा-ध्यान कर रहे थे तब उन्हें लगा कि 'अभी मैं कालू को कुछ कहूँगा तो वह मेरी बात जरूर मानेगा।'

कालू के पास जाने की भी जरूरत नहीं, अपने कमरे में बैठे-बैठे उन्होंने संकल्प के द्वारा आज्ञा दी : ''कालू! उठा ये देवी-देवताओं की मूर्तियाँ और पूजा की सामग्री भी उठा, बाँध इसका गट्ठर और गंगा में डालकर आ।''

कालू तो रोते-रोते सब मूर्तियों को उठाकर गंगा में डालने के लिए जा रहा था। रास्ते में उसे रामकृष्ण मिले, पूछा : ''क्या करता है ?''

कालू ने कहा : ''भगवान ने प्रेरणा की है कि सब मूर्तियाँ उठाकर गंगा में डाल दो।''

रामकृष्ण ने सोचा कि इसका भगवान कौन है यह देखना चाहिए। रामकृष्ण ने ध्यान में देखा कि 'यह तो मेरा शिष्य नरेन्द्र ही है।'

उन्होंने कालू से कहा : ''तू मेरे पीछे-पीछे आ, मैं तुझे तेरा भगवान दिखाता हूँ।''

फिर नरेन्द्र को रामकृष्ण ने ऐसी हरकत करने के लिए खूब डाँटा था। धारणा-ध्यान करने से इन सब शक्तियों का विकास होता है। कुछ दिखने भी लगता है और कुछ प्रलोभन भी आने

लगते हैं। भीतर कुछ ऐसा महसूस होता है कि मैं ऐसा चाहूँगा तो ऐसा हो जाएगा। ऐसा संकल्प करूँगा तो ऐसी घटना घट जाएगी। कभी एकांत में बैठकर अंतर्मुख होंगे तो धारणाशक्ति बढ़ जाएगी। इससे स्वर्ग की मसलतें भी देख सकते हैं और पापी लोग कैसे दुःख भोग रहे हैं वह भी देख सकते हैं। क्या होनेवाला है उसका स्पंदन भी हृदय में होने लगता है। इसलिए धारणाशक्ति का विकास करना चाहिए।

आत्मवेत्ताओं का यह कहना है कि धारणाशक्ति का उपयोग यहाँ की चीज-वस्तुएँ पाने के लिए न करें, परंतु देह-अध्यास से ऊपर उठकर अपने स्वरूप को जानने के लिये ही करें।

आत्मवेत्ताओं का यह कहना है कि धारणाशक्ति का उपयोग यहाँ की चीज-वस्तुएँ पाने के लिये न करें, परंतु देह-अध्यास से ऊपर उठकर अपने स्वरूप को जानने के लिये ही करें।

उस ब्राह्मण की शक्तियों का विकास हुआ तो उसे नरक की यातनाएँ दिखने लगी। कुंभीपाक, रौरव नरक भिन्न-भिन्न नरकों में जाने वाले व्यक्ति और उनका दुःख दिखने लगा।

उस समय वह मेघ देवता प्रकट हुए और ब्राह्मण को कहा : ''तुझे धन पाने की इच्छा हुई थी तो देख, धनवानों की क्या स्थिति हो रही है ?''

ब्राह्मण ने कहा : ''हे देव ! मैं धन के लिए देवताओं को रिझाता था, यज्ञानुष्ठान करता था। आपकी कृपा से मुझे शुद्ध बुद्धि मिली। अब तो ऐसा लगता है कि मैं जरा-सा संकल्प करूँ तो सैंकड़ों को धनवान बना सकता हूँ। इतनी शक्ति का खजाना मेरे पास था और मैं उस क्षुद्र धन को पाने की इच्छा करता था जिसे प्राप्त करके, जिसे भोगकर रोगी बनता और नरकों में जाता। आपकी कृपा से मुझे वैराग्य हुआ और धारणाशक्ति का भी विकास हुआ है।

अब लगता है कि अपनी शक्ति का और कोई उपयोग न करूँ। यह धारणाशक्ति जिस परमात्मा से प्रकट होती है उसको जानने में ही लगाऊँ।

ब्राह्मण ने उन शक्तियों को परमात्मपद की प्राप्ति में लगाकर अपना काम बना लिया। ब्राह्मण के पास जो धारणाशक्ति थी वह आपके पास भी है। आप भी हिंमत करें, धारणा-ध्यान का थोड़ा नियम बना लें और उस मार्ग में ले जानेवाले संतों के सांनिध्य में पहुँचकर उसका प्रारंभ करें, बाद में घर बैठे भी कर सकते हैं। आप भी अपनी शक्तियों का विकास करके, उसका उचित उपयोग करके आत्मपद की प्राप्ति करें यही आत्मवेत्ताओं का उपदेश है।

(पेज ७ से जारी...)

सकती है। वह पीड़ित होते होते चीखने-चिल्लाने प्राण भी छोड़ दे तो उसकी मुक्ति की अवस्था में कोई बाधा नहीं, क्योंकि उनके ज्ञान के संस्कार प्रगाढ़ हैं।

भक्त को भगवान की भक्ति करते-करते प्राण छोड़ने चाहिए। कर्मी को दान-पुण्य करते प्राण छोडने चाहिए। योगी को समाधि लगाना चाहिए। लेकिन ज्ञानी के लिए मरने की कोई विधि नहीं। ज्ञानी रोते-चीखते, वेश्या के घर में प्राण छोड़ दे तो भी उनकी मुक्ति में कोई बाधा नहीं, क्यों कि जिस वक्त वे ज्ञान को उपलब्ध होते हैं तब से वे मुक्त होते हैं। ज्ञानी के लिए जीवन जीने की कोई विधि नहीं तो मरने की कैसे हो सकती है ?

ऐसा ज्ञान पाने के लिए मनुष्य-जन्म मिला है। जिस किसी ने यह ज्ञान पा लिया है, उनके सांनिध्य मात्र से जीव की जड़ता बिखरने लगती है और उसका सच्चिदानन्द स्वरूप प्रगट होने लगता है।

> जो होता है, भगवान् की इच्छा अथवा प्रारब्ध से होता है, भगवान् की इच्छा सर्वथा मंगलमयी है, प्रारब्ध के अनुसार कर्मों का फल भोगना अनिवार्य है, ऐसी भावना करके सांसारिक हर्ष-विषाद के निमित्तों से प्रभावित न होना।

गौरवपूर्ण भारतीय संस्कृति

भारत की संस्कृति सबसे प्राचीन संस्कृति है । विश्व की चार संस्कृतियाँ प्राचीन हैं : इजिप्त, ग्रीस, चीन और भारत । परन्तु इजिप्त में जाओ, ग्रीस में जाओ या चीन में जाओ तो वहाँ की संस्कृति के दर्शन आपको व्यक्तियों में नहीं, अपितु खंडहरों या अजायब घरों में होंगे । जबकि भारत की संस्कृति ऐसी है कि जो प्रत्येक व्यक्ति के हृदय में दिखती है, भारत के गाँवों में दिखती है, शहरों में दिखती है । भारतवासियों के दिल, दिमाग और चेहरों पर दिखती है ।

मैं अमेरिका गया था । वहाँ मैंने देखा कि वहाँ के मनुष्यों को खाने-पीने की चिन्ता नहीं है । खाने-पीने का तो खूब है । एक झाड़ू लगाने वाले व्यक्ति को रोज के १२०० रूपये मिलते हैं, होटल में कप-प्लेट साफ करनेवाले को १२०० से २००० रू. तक रोज मिलते हैं । जबकि यहाँ तो महीने में भी इतना वेतन मिलने का ठिकाना नहीं है । अमेरिका में तो व्यक्ति खुद कमाता है, पत्नी कमाती है तो भी पूरा नहीं होता । माता-पिता बूढ़े हो जायें तो नर्सिंगहोम में रख आते हैं । नर्सिंगहोम अर्थात् वृद्ध लोगों का रहने का स्थान वृद्धाश्रम । उसमें माता-पिता को रख आते हैं ।

भारतीय संस्कृति ऐसी नहीं है । ये भारतियों के संस्कार नहीं हैं । भारतीय संस्कृति तो ऐसी है कि तुम सब कुछ भूल जाओ तो चलेगा किन्तु माता-पिता को मत भूलना । हमारे ऊपर उनके अनगिनत उपकार हैं । उन्होंने हमें जीवन दिया है, संस्कार दिये हैं ।

वहाँ रहने के लिए अच्छे मकान हैं, बड़े-बड़े रास्ते हैं, चमकती गाड़ियाँ हैं, आटोमेटिक और व्यवस्थित खेती है । एक किसान के पास २०० बीघा, ५०० बीघा जमीन है । किसान एक दिन में सब खेत जोत देता है, एक दिन में सब बीज बो देता है, एक दिन में सब कटाई कर लेता है और मशीन से सब गोदाम में भर देता है, यह सब तो है किन्तु जिससे सब है, जिसके लिए सब है । उस सर्वव्यापी परमात्मा के लिए प्यास नहीं है, उसके लिए प्रेम नहीं है । इस वेदांतिक आत्मज्ञान के संस्कार नहीं हैं । इसलिए सब होते हुए भी हृदय में होली ही होली जलती है ।

वहाँ के लोगों के पास साधन तो बहुत हैं पर हृदय में होली जलती हो तो उसे बुझाना तो पड़ेगा ही । शराब पीते-पीते थके, बीड़ी पीते-पीते थके फिर हेरोईन खाने लगे । दूसरे भी कितने ही पदार्थों का उपयोग किया किन्तु पदार्थों से शांति नहीं मिलती, सुख नहीं मिलता ।

सरकार ने इन पदार्थों पर प्रतिबंध रखा, परंतु लोगों को उसकी आदत पड़ गयी थी । चरस की आदत पड़ जाये तो चरस चाहिए ही । इन मादक द्रव्यों, पदार्थों को लिए बिना इन्सान रह न सके, सो न सके, ऐसे मनुष्यों को सरकार की ओर से ऐसे पदार्थों का डोज दिया जाता है । मनुष्य डोज लेकर बाहर आते तब सेठ लोग उनके पास से महँगे भाव में खरीद लेते । वे गरीब मनुष्य उसे बेच देते । ऐसा नहीं है कि केवल भारत में ही गरीबी है । वहाँ पर भी गरीबी है किन्तु समाचार पत्रों में नहीं आती, इतना ही अंतर है ।

सरकार ने देखा कि गरीब लोगों को दवाइयाँ मिलें, नशीले पदार्थ मिलें, इससे नशाबंदी का अमल नहीं हो सकता । इसलिए सरकार ने नियम बनाया कि ऐसा डोज बोतल में न दें, कटोरी में भी न दें, परन्तु वह डोज सीधे उसके मुँह में रख दें जिससे, वह उसे बेच न सके । अब यह मरीज मुँह में घूँट रखकर बाहर जाये और उस अस्पताल के बाहर राह देखते खड़े व्यसनी सेठ के मुँह में कुल्ला करके डोलर ले जाये । यह सब करके भी सुख ही लेना है । वहाँ के लोग सब पढ़े-लिखे हैं, किसानों के पास मोटर है, हवाईजहाज है, किन्तु फिर

> ***वहाँ की संस्कृति के दर्शन आपको व्यक्तियों में नहीं, अपितु खंडहरों या अजायबघरों में होंगे । भारतीय संस्कृति भारतवासियों के दिल, दिमाग और चेहरों पर दिखती है ।***

भी हृदय में शान्ति नहीं है। इसका कारण क्या है ? कारण यही है कि वैदिक ज्ञान और दीक्षा के संस्कार नहीं हैं।

एक होती है शिक्षा और दूसरी होती है दीक्षा। शिक्षा से इस जगत का ज्ञान होता है, वस्तुओं का उपयोग करने की कला आती है। परन्तु शिक्षा के साथ-साथ वैदिक दीक्षा न हो तो वह ऐसी वस्तुओं के पीछे ही पड़ जाता है। मानव दानव जैसा जीवन बिताने लगता है। शिक्षा मनुष्य को शिक्षित बनाती है। शिक्षित मनुष्य जितनी कुशलता से सेवा कर सकता है उतना शायद अशिक्षित कभी नहीं कर सकता। परन्तु यदि शिक्षित आदमी दीक्षित न हो तो जितना सत्यानाश कर सकता है उतना अशिक्षित आदमी कभी नहीं कर सकता। समग्र मानवजाति को विनाश के गर्त में धकेलनेवाले जो ऐटम बम बने हैं अथवा बम्बई में मेमणबंधुओं ने बम-धड़ाके करके हजारों निर्दोषों को मार डाला और करोड़ों की संपत्ति का विनाश कर दिया, वह शिक्षित व्यक्तियों द्वारा बनाये गये बम से ही न !

अशिक्षित व्यक्ति कभी इतना सत्यानाश नहीं कर सकता जितना शिक्षित व्यक्ति कर सकता है। अतः शिक्षित मनुष्य के जीवन में दीक्षा अत्यंत जरूरी है। मनुष्य की गहराई में बसे हुए मालिक की दिशा देनेवाला वेदांती ज्ञान, **'परस्पर देवो भव'** की सुंदर भावना एवं मानव-मानव में स्नेह हो तो संसार की वस्तुओं पर विजय प्राप्त की जा सकती है। संसार की वस्तुओं में वैराग्य हो तो प्रकृति पर विजय पायी जा सकती है, रिद्धि-सिद्धि हाजिर हो सकती है और रिद्धि-सिद्धि के चक्कर में न आयें तो परमात्म-साक्षात्कार किया जा सकता है। यह सब आध्यात्मिक दीक्षा का प्रभाव है।

दीक्षा रहित शिक्षा सुख-शांति और तनावरहित जीवन कभी नहीं दे सकती, मुक्ति नहीं दे सकती, इन्द्रिय-संयम नहीं दे सकती, सदाचार संयुक्त स्नेह नहीं दे सकती।

दीक्षारहित जीवन विधवा के शृंगार जैसा है। बाहर की शिक्षा तुम भले पाओ किन्तु उस शिक्षा को वैदिक दीक्षा की लगाम देना जरूरी है। अन्यथा वह अपने जीवन को बरबाद कर डालेगी।

दीक्षारहित शिक्षा सुख-शांति और तनाव रहित जीवन कभी नहीं दे सकती, मुक्ति नहीं दे सकती, इन्द्रिय-संयम नहीं दे सकती, सदाचार संयुक्त स्नेह नहीं दे सकती। अतः व्यक्ति, समाज, देश या विश्व को **'आत्मनः प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत...'** अपने प्रतिकूल हो ऐसा व्यवहार दूसरों के साथ नहीं करना चाहिए। **'परस्पर देवो भव'** की दिशा देनेवाली दीक्षा की मनुष्य को अत्यंत जरूरत है। संयम, सदाचार, सहानुभूति आदि दैवी सद्गुणों का विकास हो ऐसी दीक्षा की जरूरत है।

निगुरा होता हिय का अंधा ।
खूब करे संसार का धंधा ॥
निगुरे का नहीं कहीं ठिकाना ।
चौरासी में आना जाना ॥
यम का बने मेहमान....

दीक्षारहित जीवन विधवा के शृंगार जैसा है। बाहर की शिक्षा तुम भले पाओ किन्तु उस शिक्षा को वैदिक दीक्षा की लगाम देना जरूरी है। अन्यथा मनुष्य अपने जीवन को बरबाद कर डालेगा तो दूसरों के जीवन को बरबाद करने में क्या देर लगे ? जिस मनुष्य के पास जो वस्तु होती है वह मनुष्य वही वस्तु दूसरे को दे सकता है, उसके सिवा दूसरा कुछ नहीं दे सकता। एक दुःखी मनुष्य, क्रोधी मनुष्य के साथ बात करे तो वह उसे फटकार ही देगा, दूसरा क्या देगा ? दुःखी मनुष्य के साथ बात करोगे तो वह दुःख की बात करेगा, मूर्ख मनुष्य के साथ बात करोगे तो वह मूर्खता की बात करेगा, भक्त के साथ बात करोगे तो वह भगवान की बात करेगा, योगी के साथ योग की बातें होगी। परंतु परमात्मा के साथ

जिन्होंने अपना अस्तित्व मिला दिया, उन परमात्मा का साक्षात्कार किये हुए महापुरुष के साथ बात करोगे तो महान तत्त्व निकलेगा। यही है भारतीय संस्कृति, भारत देश की गरिमा।

विश्व में अनेक आश्चर्य प्रसिद्ध हैं। कुवैत का धधकता पेट्रोलियम प्रसिद्ध है जबकि भारत के आनंद-दाता, शांतिदाता, मुक्तिदाता ब्रह्म-वेत्ता और ब्रह्मज्ञान प्रसिद्ध हैं। वे तुम्हें तत्त्वज्ञान से, दीक्षा के ज्ञान से तृप्त कर देंगे। जीवन में बाह्य जगत की चाहे जितनी शिक्षा प्राप्त करो उसे ऐहिक ज्ञान कहा जाता है। शिल्पी से लेकर बलून बनाने की, झाडू से लेकर मंदिर बनाने की तकनिक, ये सब क्रियाएँ शिक्षा के जगत में आती हैं। शिक्षा अच्छी तो है पर शिक्षा यदि अकेली होगी तो अंदर की शांति नहीं मिलेगी, अंदर की तृप्ति नहीं मिलेगी और अंदर की शांति और तृप्ति नहीं होगी तो वह मनुष्य हेरोईन की शरण लेता है, वाईन की शरण लेता है, बिल्ली की शरण लेता है, कुत्ते की शरण लेता है। पाश्चात्य जगत के लोग मीनी-मीनी करते हैं, मीनी को खिलाते हैं, कुत्ते और कुत्तियाँ पालते हैं, सुख लेने के लिए उन्हें प्यार करते हैं। जबकि भारतवासी श्रीकृष्ण को प्यार करते हैं, भगवान राम को भोग लगाते हैं, जगदंबा और लक्ष्मी को वंदन करते हैं... 'ॐ नमो पार्वतीपतये हर हर महादेव' कहकर अपने हृदय को उज्ज्वल करते हैं। यह है भारतीय दर्शन। यह है भारत का गौरव और यह गौरव भारत के गाँव-गाँव में देखने को मिलता है।

परमहंस योगानंद जब विदेश में गये तब लाखों मनुष्य उनकी शरण में आये। आज अमेरिका में उनके आश्रम हैं, समितियाँ हैं। एक करोड़पति मनुष्य दुनिया का सब कुछ देखकर, उपयोग करके थक गया, इसलिए स्वामी परमहंस योगानंद के आश्रम में सदस्य बना। उसने ध्यान किया, कीर्तन किया। ऐसा करते-करते भार-तीय संस्कृति के दर्शन करने की इच्छा हुई।

युरोप, अमेरिका के पादरी करोड़ों, अरबों रूपयों की पुस्तकें यहाँ भारत में लाते हैं और यहाँ अपने धर्म के प्रचार के लिए मुफ्त में बाँटते हैं। जबकि भारत का साधु खाली हाथ वहाँ जाता है, तो भी उनका हृदय जीतकर वापस आता है। यह है दीक्षा का प्रभाव। यह है ज्ञान का प्रभाव। यह है आध्यात्मिक खजाने का प्रभाव।

दुनिया की तमाम विद्याओं को प्राप्त करने के बाद भी जो प्राप्त करना बाकी रहता है, उस आत्मविद्या का जिसको ज्ञान नहीं है वह खर अर्थात् खुरवाला पशु है।

दुनिया की तमाम विद्याओं को प्राप्त करने के बाद भी जो प्राप्त करना बाकी रहता है, उस आत्मविद्या का जिसको ज्ञान नहीं है वह खर अर्थात् खुरवाला पशु है। श्रीमदभागवत के दसवें स्कंध के ८४ वें अध्याय के १२ वें एवं १३ वें श्लोक में आया है कि भगवान श्रीकृष्ण आगंतुक साधु-संतों का स्वागत करते हैं। जो संस्कृति का विस्तार करते हैं, जो लोगों के हृदय में ज्ञान का दीपक प्रगटाते हैं ऐसे महापुरुषों के आदर-सत्कार का कार्य भगवान ने स्वयं उठा लिया है।

वासुदेव के यज्ञ में भगवान आगंतुक संतों के चरण पखारते हैं। तब एक साक्षात्कारी त्रिकालज्ञानी संत आये। उन्होंने भगवान को पहचान लिया और कहा :

''हे कन्हैया ! तेरी ऐसी लीला यहाँ नहीं चलेगी। मैं तुम्हें पहचानता हूँ। ये पैर धोने की जरूरत नहीं है। यह सब रहने दो।''

पचास वर्ष तक की हुई निष्कपट भक्ति से हृदय का अज्ञान दूर नहीं होता। आप जैसे आत्म-साक्षात्कारी पुरुषों के एक मुहूर्त के सत्संग से हृदय का अज्ञान दूर हो जाता है।

तब श्रीकृष्ण कहते हैं : ''पचास वर्ष तक

(अनु. पेज १६ ऊपर)

भागवतीय धर्म

जैसे भगवान में स्नेह है, भगवान में आनंद है, भगवान में प्रेम है और भगवान में पवित्रता है ऐसे ही भगवान के नाम में भी है, उतने का उतना, वैसे का वैसा । जैसे भगवान करुणामय है, प्रेममय है, आनंदमय है वैसे ही भगवान का नाम भी करुणामय, स्नेहमय, आनंदमय और चैतन्यमय है । चाहे तुम गुस्से से भी नाम कह दो फिर भी कल्याण होता है ।

भाव कुभाव अनघ आलसहु,
नाम लेत मंगल दिसी दसहु ।

राजसूय यज्ञ में किसकी पहले पूजा हो इस बात पर विचार-विमर्श हो रहा था । सबने बहुमति से कहा कि पहले भगवान श्रीकृष्ण की पूजा होनी चाहिए । शिशुपाल ने श्रीकृष्ण की पूजा पर आपत्ति उठाई और श्रीकृष्ण को गालियाँ देने लगा । शिशुपाल ऐसा पापी, कि भगवान को भी गालियाँ देने लगा । वह भी एक दो नहीं, पूरी सौ गालियाँ दे डाली । फिर भी भगवान श्रीकृष्ण कुछ न बोले क्योंकि उन्होंने उसकी माँ को वचन दिया था कि 'तेरे बेटे के सौ अपराध माफ कर दूँगा ।'

किन्तु जब शिशुपाल ने एक सौ एक वीं गाली दी तो भगवान श्रीकृष्ण ने सुदर्शन चक्र का आवाहन किया, जिससे शिशुपाल का मस्तक कटकर पृथ्वी पर गिर पड़ा । भगवान दयालु हैं किन्तु जरूरत पड़ने पर इन्हें क्रोध भी करना पड़ता है । आप अपने शरीर के लिए दयालु तो हैं, लेकिन कैन्सर की गाँठ बढ़ने पर उस पर छुरी भी तो लगवाते हैं । शरीर में, पेट में, पीड़ा होने पर पैसे देकर ऑपरेशन भी तो करवाते हैं । ऐसे ही जरूरत पड़ने पर समाज के हित में बाधक बनने वालों को दण्ड देने के लिए भगवान को भी शस्त्रों का प्रयोग करना पड़ता है ।

जब शिशुपाल ने एक सौ एक वीं गाली दी तो भगवान श्रीकृष्ण ने सुदर्शन चक्र का आवाहन किया, जिससे शिशु-पाल का मस्तक कटकर पृथ्वी पर गिर पड़ा ।

भगवान और संत दयालु हैं, उदार हैं, करुणामय हैं । शिशुपाल का मस्तक तो कट गया लेकिन उसका तेज श्रीकृष्ण में समा गया । यह देखकर युधिष्ठिर महाराज को संदेह हुआ कि शिशुपाल एक अपराधी, इतना दुष्ट कि भगवान तक का अपमान कर दिया, सौ-सौ अपशब्द कहे । लेकिन इस पापी की आत्मा भगवान में कैसे मिल गई ? अपने संदेह को दूर करने के लिए युधिष्ठिर महाराज ने देवर्षि नारदजी से पूछा : '' शिशुपाल जैसे महापापी व्यक्ति की आत्मा को भगवान ने अपने चरणों में जगह कैसे दे दी ?''

तब नारदजी बोलते हैं : '' भगवान एक ऐसें सनातन तत्त्व हैं कि वे सबको ठौर देते हैं । जैसे कि आकाश में सब रह रहे हैं । गंगा का जल सबके लिए समान रूप से बहता है । बालक पीने आये या गाय, हाथी पीने आये या सिंह, गंगा सबको समान रूप से शीतल जल देती है । ऐसा नहीं कि सिंह के लिए गरम हो जाये और गाय के लिए शीतल । गंगा का स्वभाव है सबको जल देना, सूर्य का स्वभाव है प्रकाश देना, माँ का स्वभाव है सब बेटों का हित करना । चाहे लफंगा बेटा हो, माँ की बात न मानता हो, माँ को सामने सुना देता हो, माँ उसे थप्पड़ भी मार देती हो, फिर भी जब माँ की गोद में बेटा आता है तो वह भले ही मैला कुचैला हो, माँ उसे गले से लगा लेती है । ऐसे ही भगवान तो प्राणीमात्र की माँ की माँ और पिता के पिता हैं । भगवान श्रीकृष्ण भी सबको गले से लगा लेते हैं ।''

भगवान एक ऐसे सनातन तत्त्व हैं कि वे सबको ठौर देते हैं । जैसे कि आकाश में सब रह रहे हैं ।

जब बालक गंदा होता है तो माँ गर्मी में शीतल जल से और सर्दी में गर्म जल से बालक को नहलाती है । बच्चे को पसंद नहीं फिर भी माँ साबुन लगाती है, रगड़ती

है। बच्चे के साथ माँ की दुश्मनी नहीं होती, स्नेह होता है। केवल बच्चे की गंदगी पर माँ का कड़ा हाथ होता है, साबुन लगाती है या तौलिये से रगड़कर पोंछती है। ऐसे ही शिशुपाल के कर्म को शुद्ध करने के लिए भगवान ने जरा कड़ी आँख दिखाई। बाकी तो भगवान समझते हैं कि शिशुपाल हो या और कोई पाल हो, सबकी गहराई में तो जगत् का पालनहार मेरा ही स्वरूप है। अपने स्वरूप को मनुष्य दूर नहीं कर सकता। अपने बालक को माँ दूर नहीं करती, बाप दूर नहीं करता। बालक चाहे कैसा भी हो, होता तो अपने माता-पिता का ही है। माता-पिता यही सोचते हैं कि 'मेरा बेटा है।' ऐसे ही भगवान समझते हैं कि मेरा बच्चा है। इसलिए भगवान ने शिशुपाल को अपनी शरण दे दी। उसने क्रोध में आकर भी चिंतन तो भगवान का किया।

बच्चे के साथ माँ की दुश्मनी नहीं होती, स्नेह होता है। केवल बच्चे की गंदगी पर माँ का कड़ा हाथ होता है।

तुलसी अपने राम को, रीझ भजो या खीज।
भूमि फेंके ऊगेंगे, उलटे - सीधे बीज॥

यही भगवान का भागवतीय धर्म है। कुब्जा ने कौन-सी तपस्या की थी? कौन-सी भक्ति की थी? वह तो पापी कंस की दासी थी, शरीर से कुरूप थी। कंस के लिए अगर-चंदन का लेप तैयार करती थी, कंस की मालिश करती थी। श्रीकृष्ण जब ग्वाल-गोपों के साथ मथुरा जा रहे थे, तब वह भी कंस के लिए चंदन लेकर उसी रास्ते पर जा रही थी।

श्रीकृष्ण बोले : '' हे सुन्दरी !''

कुब्जा ने देखा यहाँ तो सब लड़के ही लड़के हैं। कोई सुन्दरी नहीं है और मैं तो कुब्जा हूँ, कुरूप हूँ। मुझे थोड़े ही कहते होंगे? वह तो चलती भयी।

श्रीकृष्ण ने दुबारा दोहराया : '' हे सुन्दरी !''

उसने दुबारा भी सुना-अनसुना कर दिया, लेकिन भगवान रुके नहीं। भगवान देखते हैं कि मैं जिस रास्ते से जा रहा हूँ, उसी रास्ते पर चार कदम दूर यह जा रही है। मेरे सामने जो भी आता है उसका कल्याण करना मेरा स्वभाव है। चंद्रमा का स्वभाव है चाँदनी देना, गुड़का स्वभाव है मीठास, बर्फ का स्वभाव शीतलता। ऐसे ही भगवान और भगवान के प्यारे संतों का स्वभाव है जीव का कल्याण। समाज का ज्ञान, भक्ति बढ़ाये बिना उनसे रहा नहीं जाता।

भगवान तीसरी बार बोलते हैं :

'' अरी सुन्दरी !''

कुब्जा देखती है कि यहाँ तो लड़के ही लड़के हैं, स्त्री तो एक भी नहीं और मैं सुन्दर नहीं हूँ। किन्तु श्रीकृष्ण के वचन सुनकर, अब उस पगली से नहीं रहा गया। उसका अंदर का प्यार उमड़ आया और बोली :

'' बोलो सुन्दर ! क्या कहते हो ?''

श्रीकृष्ण बोले : ''देख सुन्दरी ! यह जो अगर-चन्दन का लेप ले जाती है, वह मुझे देगी क्या ?''

कुब्जा बोली : ''लो, लगा लो।''

चंद्रमा का स्वभाव है चाँदनी देना, गुड़ का स्वभाव है मीठास, बर्फ का स्वभाव शीतलता। ऐसे ही भगवान और भगवान के प्यारे संतों का स्वभाव है जीव का कल्याण।

अब उसको कंस का भय नहीं रहा क्योंकि उसे श्रीकृष्ण का प्यार मिल गया। सबको प्यार की प्यास है, स्नेह की प्यास। कुब्जा ने चंदन का लेप दिया जिसे श्रीकृष्ण और बलराम ने लगाया और दूसरे बालकों को तिलक कर दिया।

भगवान ने कुब्जा के पैर पर पैर रखकर, ठौड़ी से उसको खींचकर एकदम सीधा बना दिया। श्रीकृष्ण का हाथ लग गया और वह सुन्दर हो गयी। बताओ, कुब्जा का किस जन्म का तप था? उसने कौन-सा यज्ञ किया था? फिर भी उसे शरीर की सुन्दरता तो मिली ही, श्रीकृष्ण की भक्ति भी मिल गयी। यह भागवतीय धर्म है, भगवान

की अपनी उदारता है, अपनी विशालता है ।

जीव को अपनी आत्मा का, अपने वास्तविक स्वरूप का और भगवान की उदारता का ज्ञान नहीं है । इसीलिए इस मायिक जगत को सच्चा समझकर बिचारा भ्रान्ति में उलझ रहा है । जीव को अपनी अमरता का अमृत नहीं मिला, इसीलिए बेचारा विषय-विकारों में फँस कर मर रहा है । उसे ईश्वर का शुद्ध, पवित्र सुख नहीं मिला है इसीलिए वह सेक्स के और अन्य गंदे विषय-विकारों के सुख में अपने को निचोड़ रहा हैं । अगर जीव को शुद्ध सुख मिल जाये, तो उसके अंदर दैवी संपदा विकसित होने लगती है । जिससे उसका तो कल्याण होता ही है, जिस पर उसकी निगाह पड़ती है, उसके पाप भी भस्म होने लगते हैं । इतना वह पवित्र हो जाता है ।

जीव को अपनी आत्मा का, अपने वास्तविक स्वरूप का और भगवान की उदारता का ज्ञान नहीं हैं । इसीलिए इस मायिक जगत को सच्चा समझकर बिचारा भ्रान्ति में उलझ रहा हैं ।

मरना भला है उनका, जो जीते हैं खुद के लिए ।
जीना भला है उनका, जो मरते हैं इन्सान के लिए ॥

अपने स्वार्थ के लिए तो कुत्ता भी जी लेता है, पूँछ हिला देता है। अपने पिल्लों को तो कुत्ती भी पाल लेती है । कौआ भी अपनी चोंच में भरकर अपने बच्चों को खिला देता है । आपने अपने परिवार को खिला दिया तो कोई बड़ी बात नहीं । किन्तु हजारों लोगों के हृदय में ज्ञान और प्रकाश फैले उसके लिए आत्मज्ञान पाना जरूरी है । आत्मज्ञान के लिए यदि तुमने यत्न किया तो भगवान की तुम पर विशेष कृपा होगी और आत्मज्ञान पाने के बाद तुम्हारे द्वारा हजारों का कल्याण होने लगेगा। अपने लिए तो सभी कमा लेते हैं । ऐहिक धन-संपत्ति को कमाना कोई बड़ी बात नहीं क्योंकि चाहे जितना भी कमाओगे, अंत में सब यहीं पड़ा रह जायेगा ।

दुनिया में कमाया खूब,
क्या हीरे क्या मोती ?
लेकिन क्या करें यारों !
कफन में जेब नहीं होती ॥

मृत्यु के समय समस्त ऐहिक संपत्ति को यहीं छोड़कर जाना पड़ेगा । किन्तु यदि एक बार आत्मज्ञान रूपी संपत्ति को पा लिया फिर और कुछ पाना शेष न रहेगा और वह सम्पत्ति सदा के लिए तुम्हारी हो जायेगी । उसके द्वारा तुम्हारा तो बेड़ा पार हो ही जायेगा, किन्तु तुम्हारे संपर्क में आने वाले का भी कल्याण हो जायेगा । इसके लिए जरूरी है कि हम भगवान के भागवतीय धर्म को समझकर आचरण में उतारने का प्रयास करें एवं इसके लिए प्रभु से प्रार्थना करें ।

(पेज १३ से जारी...)

की हुई निष्कपट भकित से हृदय का अज्ञान दूर नहीं होता । हृदय शुद्ध होता है पर अविद्या दूर नहीं होती । आप जैसे आत्म-साक्षात्कारी पुरुषों के एक मुहूर्त के सत्संग से हृदय का अज्ञान दूर हो जाता है ।''

इसीलिए रामायण, में आया है : **'गुरु से पहले जगपति जागे ।'** भगवान राम और लक्ष्मण विश्वामित्र की पैरचंपी करते हैं ।

जिसके पास सोने की लंका है, मदोन्मत्त हाथियों का काफिला है, घोड़े कूदाकूद कर रहे हैं, ऐसे रावण को तीर का निशाना बनाकर राक्षस की पदवी दी गई है । यदि केवल ऐहिक विद्या का ज्ञान हो, मन में शांति न हो, भीतर का रस न हो तो उस अंदर के रस के न होने से मन राक्षस जैसा हो जाता है ।

रावण राक्षस नहीं था, ब्राह्मण था । चार वेद पढ़ा हुआ था । परन्तु आत्मिक रस से विमुख होने के कारण उसे भारतीय संस्कृति में असुर के रूप में गिना गया । जबकि विश्वामित्र ब्राह्मण नहीं थे फिर भी ब्रह्मर्षि हो गये । ब्रह्म को जो जानता है वह ब्राह्मण, ब्रह्मचिंतन करता है वह ब्राह्मण है । हाड़माँस का शरीर दीक्षा से शुद्ध होता है । वेदपाठ से मनुष्य पुरोहित बनता है और ब्रह्मज्ञान से, ब्रह्मज्ञान के श्रवण से मनुष्य ब्राह्मण हो जाता है ।

पहियोंवाला बंगला

कलकत्ता में एक मध्यम वर्ग का आदमी था, शगालचन्द सेठ। उसने अपनी बल-बुद्धि से एक बढ़िया बंगला बनवाया। मध्यम में भी तीन भाग कर सकते हैं : उत्तम मध्यम, मध्यम मध्यम और कनिष्ठ मध्यम। तो यह सेठ उत्तम मध्यम था। यह घटित घटना है आज से कुछ साल पहले की।

उस बंगले में एक पूजा का कमरा भी बनवाया। रसोईघर, स्नानघर, अतिथि-निवास, ड्राईंगरूम आदि। इस प्रकार के पाँच-सात कमरे नीचे, पाँच-सात कमरे दूसरी मंजिल पर। ऊपर एक छोटा-सा झूला भी लगाया। मकान का वास्तुपूजन तय हुआ। शगालचन्द सेठ ने सोचा कि वास्तुपूजन में रिश्ते-नातेदार तो आयेंगे। उन्हें चाय-नास्ता मिल जाये इतना ही पर्याप्त नहीं है। उनके जीवन में सत्संग का, हरिनाम का भी थोड़ा नास्ता मिल जाये तो और अच्छा होगा। मेरे घर के उद्‌घाटन में केवल खुशामदखोर आकर 'वाह भाई वाह! बंगला बढ़िया बना दिया...' ऐसा कहें, ऐसे लोग आ जायें उसकी अपेक्षा मेरे गुरु महाराज आ जायें तो कितना अच्छा होगा!

सेठ शगालचन्द ने अपने गुरु महाराज से कैसे भी करके वास्तुपूजन के समय पधारने की अनुमति ले ली। गुरु महाराज आये। एक बड़ा मंच बना। गुरु महाराज उस पर बैठे। वास्तुपूजन के निमित्त लोग भी काफी आये। भोजन से पहले बाबाजी के सत्संग में लोग बैठे। सत्संग पूरा हो गया।

भोजन समारंभ चालू हो उसके पहले गुरु महाराज सब कमरों में घूम रहे हैं। शगालचन्द को लगा कि गुरु महाराज सब देखकर कुछ कहेंगे। अच्छा-अच्छा कहलाने की भी आदत पड़ जाती है। जैसे चपरासी तुम्हारी खुशामद करता है, क्लर्क खुशामद करता है, हेड क्लर्क खुशामद करता है, अफसर खुशामद करता है तो कभी-कभी तुम चाहते हो कि बॉस भी हमारी खुशामद करे। यह भी मन की माँग होती है और अगर बॉस खुशामद करने लग जाये तो अपनी अपेक्षा होती है कि बॉस का भी बॉस हमारी खुशामद कर दे क्योंकि आदमी का मन जो चीज मिलती है उसकी तरफ और आकर्षित होता जाता है। माँग और बढ़ती जाती है।

मन का यह स्वभाव है। यदि उदारता के तरफ चलोगे तो उदार होते-होते ऐसे उदार हो जाओगे कि अपना अहं भी देकर परमात्मा को पा लोगे।

मन का यह स्वभाव है। यदि उदारता के तरफ चलोगे तो उदार होते-होते ऐसे उदार हो जाओगे कि अपना अहं भी देकर परमात्मा को पा लोगे, जैसे कि राजा बलि। आदमी की जो आदत है, मन जिधर को चलता है, वह चलते-चलते फिर उसीमय हो जाता है।

तो, प्रशंसा सुनने वाला यह सेठ ज्ञानी तो था नहीं, एकदम मूढ़ भी नहीं था, बिचारा मध्यम था। वह गुरु महाराज को सब ओर घुमाने ले गया।

''गुरु महाराज! यह रसोईघर है। रसोईघर में पानी की ऐसी व्यवस्था की है कि रसोई बनाते-बनाते खड़ा नहीं होना पड़े। छना हुआ पानी जब चाहिए, जितना चाहिए, जहाँ चाहिए मिल सकता है। नया रसोइया भी आवे तो उसको भी ज्यादा देर न लगे वस्तुओं को समझने में। ऐसी सुन्दर व्यवस्था की है।''

महाराज ने कहा : ''हाँ।''

कोई भी प्रशंसा का शब्द महाराजजी ने नहीं कहा।

गुरुमहाराज तो दूसरा कमरा, तीसरा कमरा, चौथा कमरा देख आये, बालकनी में आये और फिर ऊपर गये। बाद में पूजा का कमरा देखा, ऑफिस में आये। फिर सेठ महाराजजी को एकान्त में ले गया। वह सोचता है, गुरु महाराज को इतना-इतना दिखाया, फिर भी 'बढ़िया बनाया' ऐसा नहीं कहते।

आखिर शगालचंद से रहा नहीं गया और पूछ ही बैठा :

''गुरु महाराज! मकान कैसा लगा?''

उसे इच्छा तो थी कि गुरुजी प्रशंसा के दो फूल बरसा

दें। परंतु महाराज कोई कच्ची मिट्टी के नहीं थे कि जल्दी वाह-वाह बोल दें ।

महाराज तो चाहते थे कि हमारे संपर्क में आने वाले को महान राज्य मिले । वह खाली ईंट, लोहा, चूना, लकड़ी के घर में उलझ न जाये। वे तो महाराज थे महान राज्य दिलाने वाले । वेदान्ती ब्रह्मज्ञानी संत रहे होंगे ।

शगालचंद सेठ ने प्रयत्न किया कि बाबाजी 'बढ़िया' कह दें । उनका प्रमाण-पत्र मिल जाय बस ! इतनी याचना थी । इधर-उधर सब बताकर वह बोला : ''गुरुजी! रसोईघर कैसा लगा ? बाबा, पूजा के कमरे में तो कोई कमी रह नहीं गई न ?''

उसने कई तकनीक आजमाई अपनी बुद्धि से। गुरुजी कच्चे नहीं तो चेलाजी भी कच्चे नहीं। आखिर चेलाजी तो चेलाजी ही रहे । चेलाजी का धैर्य टूटा । बोले : ''गुरु महाराज ! कोई कमी तो नहीं रह गयी है न ? बढ़िया है न मकान ? आप बढ़िया कहें तो हमें खुशी होती है । कोई कमी तो नहीं है ?''

बाबाजी बोले : ''कोई कमी नहीं रह गई ऐसी बात नहीं है। एक छोटी-सी कमी रह गई है ।''

सेठ बोला : ''छोटी-सी कमी ? मैं अभी ठीक करवा देता हूँ महाराज ! ठेकेदार, आर्कीटेक्ट, मजदूर सब अभी यहीं हैं । वास्तुपूजन में मैंने सबको बुलाया है । उनको आज भोजन यहीं करना है ।''

सेठ ने सोचा, कोई खिड़की-दरवाजे की डिजाईन में, फिटिंग में, कुछ थोड़ा-सा फर्क रह गया होगा ।

बाबाजी ने कहा : ''बिल्कुल छोटी-सी गलती रह गई है ।''

सेठ बोला : ''महाराज ! कहिए। मैं अभी ठीक करवा लूँ ।''

बाबाजी बोले : ''यह छोटी-सी गलती तुम्हारे ठेकेदार से या आर्कीटेक्ट से निकल जाये ऐसी नहीं है।''

सेठ बोले : '' तो गुरुजी ! तोड़-फोड़ कर नये सिरे से एकाध कमरा बना सकते हैं ।''

बाबाजी बोले : ''तोड़-फोड़ से भी नहीं बनेगा । यह गलती निकल ही नहीं सकती है । छोटी-सी ही गलती के कारण सब व्यर्थ हो जाता है ।''

इस मकान को पहिए नहीं हैं ।

सेठ बोला : ''कहिए महाराज ! कौन-सी गलती है ?''

बाबाजी बोले : '' इस मकान को पहिए नहीं हैं । यह मकान तू साथ में ले जाता । वहाँ भी आराम से रहता । अब तो तुम बुड्ढे हो गए । तुम्हें जाना पड़ेगा, तब मकान यहीं रह जाएगा । उसको पहिए होते तो बढ़िया काम बन जाता ।''

आखिर वह सेठ भी बुद्धिमान था । उसने कहा : '' महाराज ! यह गलती भी पूरी हो जायेगी । पहिए भी डल जायेंगे । शर्त यही है कि आप एक घंटा और थोड़ा सत्संग करें । तब तक मैं पहिए डलवाकर आपके चरणों में हाजिर हो जाता हूँ । तब तक सत्संगियों को आपके अमृतपान का लाभ हो । हम और दान तो नहीं कर सकते लेकिन दूसरों के दिल में दिलबर के प्रसाद का तो दान करने का पुण्य कमा लें !''

अब तो तुम बुड्ढे हो गए । तुम्हें जाना पड़ेगा, तब मकान यहीं रह जाएगा । उसको पहिए होते तो बढ़िया काम बन जाता ।

बाबाजी प्रसन्न हो गये उसकी नम्रता भरी बिनती से। मंच पर जाकर बाबाजी ने सत्संग का आरंभ किया। एक घंटे में तो वह सेठ आ गया अपने सोलीसीटरों से सारा दस्तावेज करवा-कर । वह बोला :

'' यह जो बढ़िया मकान बनाया है वह इस शरीर के उपभोग के लिए नहीं होगा । समाज के थके-माँदे, भूखे-प्यासे जो भी लोग हों इसमें विश्राम पायेंगे और आज इसके वास्तुपूजन के साथ ही उसका ट्रस्ट बनाया गया है और यह आज से लोगों के उपयोग की चीज बन गया है। उसमें मेरा कोई अधिकार नहीं रहेगा।''

उसने महाराज के चरणों में दस्तावेज रख दिया ।

'' गुरुजी ! देखो, उसमें पहिए लगा दिये ।''

गुरु महाराज ने कहा : ''बैटा ! आखिर तो तू मेरा चेला है । शाबाश ! अब यह मकान तेरे साथ चलेगा, जरूर चलेगा !''

भारत के योगी कहते हैं कि कीट-पतंग, पेड़-पौधे, जानवर आदि माया के तमस अंश से संचालित हैं और देवता आदि जो हैं सात्त्विक अंश से संचालित हैं परंतु उनके पास अति विलासिता है इसलिए आत्मज्ञान के तरफ नहीं आते । तमस् योनियों के पास अति मूढ़ता है इसलिए वे परमात्मा के ज्ञान के तरफ नहीं आते । समाज में जो अति धनी हैं वे भी आध्यात्मिक रास्ते सीधे नहीं चल सकते और जो अति कंगाल हैं, अति बुद्धू हैं, वे भी इस रास्ते ठीक से नहीं चल पाते । मध्यम वर्ग के लोगों में कुदरत ने, प्रकृति ने सब ठीक-ठीक फिट किया है इसलिए परमात्मा के तरफ मध्यमवर्ग के लोग ज्यादा चल सकते हैं । अति दरिद्र, अति धनवान और अति मूर्ख नहीं चल सकते ।

एकदम गिरे हुए लोग और एकदम समाज की दृष्टि से ज्यादा धनवान, ज्यादा प्रतिष्ठित व्यक्ति कथा में, सत्संग में इतनी रुचि नहीं रख सकते हैं । मध्यम वर्ग के जीवन में सब ठीक-ठीक मात्रा में है । थोड़ा सुख है थोड़ा दुःख है, थोड़ी प्रतिकूलता है थोड़ी अनुकूलता है । उनका अनुभव उन्हें बलात् परमात्मा की तरफ ले जाता है । आखिर में तो जवानी चली जायेगी, बुढ़ापा आगेया, शरीर लाचारी दिखायेगा और अंत में एक दिन स्मशान में चला जायेगा । यह बात मध्यम वर्ग का आदमी जितनी सच्चाई से सोच सकता है, उतना धनी आदमी नहीं सोच सकता । मूर्ख आदमी भी नहीं सोच सकता ।

झूठा खेले सच्चा होय सच्चा खेले बिरला कोय

राजा भोज के दरबार में एक बहुरूपिया भिन्न-भिन्न स्वाँग बनाकर आया करता था। एक बार वह कोई नया स्वाँग बनाकर आया था तब राजा भोज ने उससे कहा : ''तुम चाहे कोई भी स्वाँग बनाकर आते हो, मैं तुम्हें पहचान जाता हूँ। अब तुम कोई ऐसा स्वाँग बनाकर आओ कि मैं तुम्हें न पहचान सकूँ।''

बहुरूपिये ने कहा : ''महाराज ! मैं जा रहा हूँ। अब आप सावधान रहना। मैं कोई भी रूप बनाकर कभी भी आ सकता हूँ।''

राजा बोले : ''हाँ, हाँ, मैं तुम्हें पहचान जाऊँगा।''

बहुरूपिया : ''महाराज ! मैं ऐसा स्वाँग बनाऊँगा कि आप धोखा खा जाएँगे।''

राजा : ''मैं हर रूप में तुझे पहचान जाता हूँ।''

बहुरूपिया : ''मैं अब चला। महाराज ! सावधान रहना। मैं ऐसा कुछ करूँगा कि आप अवश्य धोखा खा जाएँगे।''

बहुरूपिया चला गया। योगियों से प्राणायाम, धारणा, ध्यान सीख-सीखकर कुछ दिनों के बाद घूमता-घामता नगर के बाहर झोंपड़ी बनाकर रहने लगा। नासाग्रदृष्टि एवं मौन रहने लगा। मौन में शक्ति है। एकाग्रता से निगाहों में आकर्षण आता है। जो मौन एवं एकाग्रता का अवलंबन लेता है उसके पास जादुई आकर्षण आने लगता है।

लोग उस बहुरूपिये को बाबा मानकर दर्शन के लिए उसके पास आने लगे। था तो बहुरूपिया, ढोंगी, खेल करने वाला। कभी कोई स्वाँग बना लिया तो कभी कोई। लेकिन उसने संतों के संग में मन को एकाग्र करने की, मौन रहने की और शम, संतोष एवं सत्संग के विचार में रहने की कला सीख ली। उसकी कीर्ति फैलते-फैलते आखिर राजा भोज तक पहुँची।

''महाराज ! मैं जा रहा हूँ। अब आप सावधान रहना। मैं कोई भी रूप बनाकर कभी भी आ सकता हूँ।''

राजा ने सोचा कि राज-काज करने में तो कई पाप करने पड़ते हैं, झूठ-कपट करना पड़ता है। चलो, संत के दर्शन से अपने कुछ पाप तो काट आयें ! वह दो थाल लेकर बाबा के पास गया। एक थाल में मिठाइयाँ और सूखा मेवा है और दूसरे थाल में अशर्फियाँ हैं। राजा वे दो थाल बाबा के सामने रखते हैं, तब बाबा (भूतपूर्व बहुरूपिया) बोलते हैं :

''हे माया के गुलाम ! धन-संपत्ति के पीछे जिंदगी बेचने वाले ! काम-क्रोध के खिलौने ! क्या मुझ जैसे योगी को तू ये चंद सुवर्ण के टुकड़ों से प्रभावित करना चाहता है ? उठा इस माया नागिन को। तू मुझे ये तुच्छ वस्तुएँ भेंट करने आया है ! चल उठा, भ्रष्ट कहीं का !''

''हे माया के गुलाम ! धन-संपति के पीछे जिंदगी बेचने वाले ! काम-क्रोध के खिलौने! क्या मुझ जैसे योगी को तू ये चंद सुवर्ण के टुकड़ों से प्रभावित करना चाहता है ? उठा, इस माया नागिन को।''

राजा भोज ने तो दोनों थाल उठा लिये। रथ में रखे। राजा भोज बड़ा प्रभावित हो गया। नकली माल का लेबल असली माल से ज्यादा सुन्दर, चमकीला होता है। व्यक्ति जिस आदमी की नकल करता है वह असली व्यक्ति से भी बढिया स्वाँग कर सकता है। उसने त्यागी की इतनी बढ़िया नकल की कि राजा भोज प्रभावित हो गया और बोला :

''महाराज ! आप इतने त्यागी हैं, मुझे पता न था। मैंने आपका थोड़ा-सा अपराध किया है... मुझे माफ करना।''

बाबा : ''अच्छा बेटा ! सुखी रहो। नम्रता तो है।

तुम्हारा नाम राजा भोज लगता है ।''

राजा : '' हाँ, महाराज !''

बाबा : ''अच्छा, अच्छा...! तुम्हारे इतने बच्चे हैं।''

राजा : ''हाँ, महाराज !''

अब उस बाबाजी (बहुरूपिये) को तो पता ही था। वे पुनः बोले : ''अच्छा राजन् ! मैं चाहता हूँ कि तुम्हारे राज्य से रामराज्य की खबरें आये । तुम्हारे राज्य में बाप के जीते-जी बेटा न मरे । तुम्हारे राज्य में कोई स्त्री विधवा न हो । तुम्हारे राज्य में कोई व्यभिचारी और छोटी-सी उम्र में काम-विकार में गिरने वाला न हो ।''

राजा भोज सुनकर बड़ा प्रसन्न हो रहा था । ऐसा कौन-सा राजा होगा जो अपने राज्य को 'राम-राज्य' के रूप में परिणत होते न देखना चाहे ?

बाबा : ''मैं तुम्हें ऐसा मंत्र दूँगा और ऐसी विधि बताऊँगा कि बस, तुम्हारा चहुँ ओर जय-जयकार हो जाये । तुम्हारे मन में शान्ति रहे, उद्वेग न आये।''

राजा : ''महाराज ! धन्य हो जाऊँगा । कब आऊँ ?''

बाबा : ''कल सुबह चार बजे नहा-धोकर, शुद्ध वस्त्र पहनकर अकेले आना ।''

राजा गया राजमहल में । अब उसे नींद ही न आये क्योंकि अन्दर से सहमति थी कि सुबह जाना है । भीतर से यदि व्यक्ति की सहमति न हो तो फिर आलार्म भी क्या करे ? आलार्म घंटी बजा सकता है किन्तु कम्बल तो आलार्म नहीं हटायेगा । कम्बल तो अपने को ही हटाना पड़ता है । जिसकी भीतर से सहमति होती है वह चार बजे के पहले चार बार जाग जाता है । राजा सुबह जल्दी जाग गया । चार बजे नहा-धोकर उस बाबा की कुटिया में पहुँचा । जाकर देखता है तो वहाँ चिरपरिचित बहुरूपिया बैठा है । उससे राजा भोज बोलते हैं : ''अरे, तू इधर कैसे ?''

बहुरूपिया : ''जो कल बाबाजी बनकर बैठा था और आपको मंत्र देने के लिए बुलाया था वह मैं ही हूँ। आपके साथ पहले बातचीत हुई थी तब आपने कहा था कि 'कोई ऐसा रूप बनाओ कि मैं धोखा खा जाऊँ।' इसलिए आपको धोखा देने के लिए मैंने त्यागी बाबा का वेश धारण किया था ।''

राजा : ''अरे, तू था ? बहरूपिये ! तूने तो पक्का धोखा दे दिया। कमाल कर दिया ! शाबाश ! ले इनाम!''

राजा ने अपना बाजूबंद उतार कर दिया और बोला : ''लेकिन मैं एक बात पूछता हूँ कि कल मैंने थाल भरकर अशर्फियाँ रखीं तेरे पास तो तूने रख क्यों नहीं ली ?''

बहुरूपिया : ''महाराज ! उस समय मैं त्यागी साधु का स्वाँग अदा कर रहा था । साधु के नाम पर कलंक लग जाये, ऐसा काम मैं क्यों करूँ महाराज ?''

राजा और खुश हुआ और बोला : ''तू ये बाजूबंद ले ले, अँगूठी भी ले ले, इनाम में । लू राज-दरबार में आ जाना, मैं तुझे एक-दो गाँव के पट्टे कर दूँगा । तेरे पुत्र-पौत्र खाते-पीते रहेंगे ।''

बहुरूपिया : ''महाराज ! आप एकाध गाँव का पट्टा दे दोगे, फिर भी मैं रहूँगा तो आपका ही याचक महाराज ! अब मुझे आपकी याचना से तृप्ति नहीं करनी है। मैंने झूठ-मूठ में आपको धोखा देने के लिए साधुओं की थोड़ी-सी प्रक्रिया सीखी तो आपके जैसे मुझे गरीब नजर आते हैं । मैं जितना सुखी हुआ हूँ, जितनी मुझे शांति मिली है जो मुझे आनंद मिला है और मुझे जो अंदर का राज्य मिला है उसके आगे तो मुझे लगता है कि आपका राज्य, राज्य नहीं, काँटों का ताज है । मुसीबतों का घर है महाराज ! अब मुझे आपका पट्टा

(अनु. पेज २३ ऊपर)

मैंने झूठ-मूठ में योगाभ्यास किया, झूठ-मूठ में भगवान की आराधना की, झूठ-मूठ में साधु का स्वाँग किया तो आप जैसे सम्राट मेरे आगे नतमस्तक हो गये । अतः यदि सच्चे साधु का बाना निभा दिया जाये तो सम्राटों का सम्राट परमात्मा भी मेरे दिल में प्रगट हो जायेगा ।

परम पूज्य श्री लीलाशाह बापू का प्रसाद

'नीम'

हमारे परम पूज्य दादागुरु पूज्य लीलाशाह बापू रोज सुबह खाली पेट नीम के पत्तों और तुलसी के पत्तों का रस या पत्ते लेते थे, जिससे उन्हें कभी बुखार नहीं आता था एवं उनका स्वास्थ्य हमेशा अच्छा ही रहता था।

परम पूज्य गुरुदेव श्री आसारामजी बापू भी सुबह खाली पेट नीम के कोमल पत्ते चबाकर एक गिलास पानी पीते हैं। पूज्य बापू सत्संग में कई बार यह बात कहते हैं कि जिस वस्तु की हमें अत्यंत आवश्यकता होती है वह हमें बड़ी आसानी से मिल जाती है जैसे कि हवा, पानी की हमें अत्यावश्यकता होती है तो वह आसानी से मिल जाता है। उसी प्रकार नीम हमारे लिए अत्यंत उपयोगी है अतः वह भी सरलता से मिल जाता है। आसानी से मिलते नीम, तुलसी, करंज, शिरीष वगैरह का उपयोग स्वयं किया जा सकता है।

जो व्यक्ति मीठे, खट्टे, खारे, तीखे, कड़वे और तूरे, इन छः रसों का मात्रानुसार योग्य रीति से सेवन करता है उसका स्वास्थ्य उत्तम रहता है। हम अपने आहार में गुड़, शक्कर, घी, दूध, दही जैसे मधुर, कफवर्धक पदार्थ एवं खट्टे, खारे और मीठे पदार्थ तो लेते हैं किन्तु कड़वे और तूरे पदार्थ बिल्कुल नहीं लेते जिसकी हमें सख्त जरूरत है। इसी कारण से आजकल अलग-अलग प्रकार के बुखार, मलेरिया, टायफाईड, आंत के रोग, डायाबिटिज, सर्दी, खाँसी, मेदवृद्धि, कोलेस्टरोल का बढ़ना, ब्लड़प्रेशर जैसी अनेक बीमारियाँ बढ़ गई हैं।

भगवान अत्रि ने चरकसंहिता में दिये गये उपदेश में कड़वे रस का खूब बखान किया है जैसे कि : **तिक्तो रसः स्वयमरोचिष्णुररोचकघ्नो विषघ्न कृमिघ्न ज्वरघ्नो दीपनः पाचनः स्तन्यशोधनो लेखनः श्लेष्मोपशोषणः रक्षशीतलश्च ।**

(चरकसंहिता, सूत्र स्थान, अध्याय-२६)

अर्थात् कड़वा रस स्वयं ही अरुचिकर है, फिर भी आहार के प्रति अरुचि दूर करता है। कड़वा रस शरीर के विभिन्न जहर, कृमि और बुखार को दूर करता है, भोजन के पाचन में सहाय करता है तथा स्तन्य को शुद्ध करता है। स्तनपान करानेवाली माता यदि उचित रीति से नीम आदि कड़वी चीजों का उपयोग करे तो बालक स्वस्थ रहता है।

आयुर्वेद (विज्ञान) को इस बात को स्वीकार करना ही पड़ा है कि नीम का रस यकृत की क्रियाओं को खूब अच्छे से सुधारता है तथा रक्त को शुद्ध करता है। त्वचा के रोगों में, कृमि में तथा बालों की रूसी में नीम अत्यंत उपयोगी है।

संक्षेप में, हमें हमारे जीवन में यही उतारने का प्रयास करना चाहिए कि जैसे परम पूज्य लीलाशाह बापू नियमित रूप से नीम का सेवन करते थे, वैसे ही हमें भी नीम, तुलसी, हरड़ जैसी वस्तुओं का सेवन करना चाहिए जिससे हमारा स्वास्थ्य सदैव अच्छा रहे।

आइसक्रीम शाकाहार नहीं है

आइसक्रीम में तीस प्रतिशत बिना उबला और बिना छना पानी होता है। छह प्रतिशत चरबी और सात से आठ प्रतिशत शक्कर होती है। लेकिन इन सभी सामग्रियों को मिलाने से स्वादिष्ट आइसक्रीम कैसे तैयार होती है ?

अगर विशेष तौर पर लिखा नहीं गया हो तो यह शाकाहारी नहीं होता। सबसे पहले चर्बी को सख्त करके रबर की तरह लचीला बनाया जाता है ताकि जब हवा भरी जाए तो वह उसमें समा सके। ठंडे कमरे में यह प्रक्रिया चलती है। चरबी की ताजा परत-फेनिल बर्फ लगातार उतारकर दूसरे ठंडे कमरे में ले जाया जाता है। वहाँ उन्हें अलग-अलग आकार के पैकेट में भरा जाता है। इस प्रक्रिया में कुछ आइसक्रीम फर्श पर भी

गिरती है। अच्छी मात्रा में जमा हो जाने पर उसे एकत्रित किया जाता है। फिर फर्श, मजदूरों के जूते और बाहर पड़े रहने से उसमें आई बदबू को छिपाने के लिए उनसे चाकलेट (या कोई अन्य तेज गंध व स्वाद वाली) आइसक्रीम तैयार किया जाता है। चरबी के इस मिश्रण को आइसक्रीम जैसा बनाने के लिए उनमें बहुत कुछ मिलाया जाता है। बहुत कुछ में एक खास किस्म की गोंद भी होती है। यह गोंद जानवर के अखाद्य अंगों (नाक, पूंछ, थन आदि) को उबालकर बनाया जाता है। चरबी से मिलने पर यह गोंद आइसक्रीम को स्वादिष्ट, चिपचिपा और धीरे-धीरे पिघलने वाली बनाती है। जीभ और तालू के बीच आइसक्रीम इसी गोंद के कारण मजा देता है।

क्या आप आइसक्रीम खाना चाहते हैं। पहले घरों में इसे शहद और फलों के रस से तैयार किया जाता था। बाद में दूध, अंडा और शक्कर मिलाया गया। हालांकि पेट के लिए यह भी नुकसानदेह है। इस मांसाहारी मिश्रण को भी लोगों ने अब छोड़ दिया है। अब वे जहर का घोल तैयार करते हैं।

आम तौर पर आइसक्रीम में निम्नलिखित चीजें होती हैं :

१. डिथाइल ग्लुकोज को अंडे के बदले में डाला जाता है। इस रसायन का उपयोग ठंड और दर्द निवारक दवाओं में होता है।

२. वैनिला की जगह पेपेरोनल डाला जाता है। यह ढील मारने में भी काम आता है।

३. एल्डेहाईल सी १७ चेरी आइसक्रीम में पड़ता है। इस रसायन का उपयोग प्लास्टिक और रबर रंगने में भी होता है।

४. इथाइल एसिटेट से आइसक्रीम में अनन्नास का स्वाद लाया जाता है। चमड़े और धागे की सफाई में भी इसका इस्तेमाल होता है। इसके बाष्प से फेफड़े, गुर्दे और दिल की भयंकर बीमारियाँ होती हैं।

५. बुट्राडिहाइड बादाम-पिस्ता आइसक्रीम में डाला जाता है। रबर सीमेंट बनाने के काम भी यह आता है।

६. एमिल एसिटेट डालने से केले का स्वाद मिलता है। आयल पेंट के घोल के तौर पर इसका दूसरा उपयोग भी है।

७. बैजिल एसिटेट से स्ट्राबेरी का स्वाद मिलता है, लेकिन यह नाईट्रेट घोल है।

इस तरह आप आइसक्रीम के रूप में प्रदूषित पानी, आयल पेन्ट और नाइट्रेट का घोल, ढील मारने की दवा और हवा खाते हैं और अपने लाडले बच्चों को खिलाते हैं। ***[दैनिक : नवभारत (नागपुर) से साभार]***

(पेज २१ से जारी...)

नहीं चाहिए, आपकी अँगूठी नहीं चाहिए, आपका बाजूबंद भी नहीं चाहिए। अब तो मुझे उन योगियों का पूरा योग चाहिए। मैं थोड़ा-सा योगमार्ग पर चला तो इतना प्रसन्न, आनंदित और निर्भीक हो गया। मैंने झूठ-मूठ में योगाभ्यास किया, झूठ-मूठ में भगवान की आराधना की, झूठ-मूठ में साधु का स्वाँग किया तो आप जैसे सम्राट मेरे आगे नतमस्तक हो गये। अतः यदि सच्चे साधु का बाना निभा दिया जाये तो सम्राटों का सम्राट परमात्मा भी मेरे दिल में प्रगट हो जायेगा। राजा भोज ! अब आप मेरी एक बात सुनिये कि आप भी इसी रास्ते पर चल पड़िये।''

राज्य छोड़कर मरना पड़े उसके पहले उसका मोह छोड़कर यदि अध्यात्म के पथ पर चल पड़े तो फिर बाहर का राज्य भी चलता रहेगा और अंदर का राज्य भी प्रगट हो जाएगा। एक बहुरूपिया इन साधनों का यदि झूठ-मूठ में भी अभ्यास करता है तो इतना ऊँचा हो सकता है। हालांकि किसीको धोखा देना एक सामाजिक अपराध है। कोई रूप बनाकर, स्वाँग बनाकर किसीको प्रभावित करना यह सामाजिक अपराध है। योगी का वेष बनाकर सामाजिक अपराध करने वाला व्यक्ति भी जब इतना उन्नत हो सकता है तो इस सामाजिक अपराध से बचकर कोई सचमुच में अध्यात्म पथ पर चल पड़े तो कितना उन्नत हो जाये !

ऐसी कोई इच्छा ही न की जाये जिसके भंग हो जाने पर क्रोध आने की संभावना हो।

पू. बापू अन्तर्यामी हैं...

परम आदरणीय पूज्यपाद संत श्री आसारामजी महाराज,

शत्-शत् वन्दन ...! शत्-शत् नमन... !

आपके मुखारविन्द से प्रवचन सुनने का मुझे सौभाग्य प्राप्त हुआ । दिनांक : १-३-९४ के प्रातः कालीन प्रवचन में आपने श्रीकृष्ण के चमत्कारों के विभिन्न रूपों एवं दृष्टान्तों के द्वारा श्रोताओं को दर्शन कराये । मेरा भी हृदय गद्गद और चित्त प्रसन्न हुआ । किन्तु मन में एक सन्देह भी हुआ कि इतने बड़े संत हैं मगर प्रवचन में महावीरजी का कोई उदाहरण, वर्णन नहीं आया ? मैं यह सोचता ही रहा ।

दूसरे दिन दिनांक : २-३-९४ के प्रातःकालीन प्रवचन में आपने भागवत् में ऋषभदेव के उदाहरण के साथ-साथ, बार-बार महावीर और जैन-जैनी का वर्णन एवं गुणगान किया । यह देखकर तो मैं आश्चर्यचकित ही रह गया । कल मुझे संदेह हुआ था उसका आज निवारण हो गया ।

फिर मैंने 'यौवन सुरक्षा' पुस्तक ली । उसका अवलोकन एवं वाचन करने पर उसमें भी दशवैकालिक एवं जैनसूत्र कृतांक के उदाहरण मिले ।

मेरे मन-मस्तिष्क को एक जोरदार झटका लगा । धिक्कार है मुझे कि मेरे मन में शंका उठी, तुच्छ विचार उत्पन्न हुए । मैं आपसे कितनी दूर बैठा था, फिर भी इतने सारे लोगों में मुझ जैसे अपरिचित के भी सारे विचार जान गये और अनजान की तरह कह गये, समझा गये । धन्य हैं आप, धन्य हैं !

मैं कैसा गँवार हूँ कि एक महापुरुष पर अनावश्यक शंका की । हे प्रभु ! मुझे क्षमा करें । छोटा बच्चा हूँ, नादान हूँ । मन चंचल है । इस विकारित जीवन और चकाचौंध के वातावरण में तर्क-वितर्क उत्पन्न होना स्वाभाविक है ।

अन्त में अपार-अपार क्षमायाचना के साथ...

- ताराचन्द जैन (शिक्षक)
आदर्श नगर, पाली ।

दमे की बीमारी गायब

मैं एक मध्यम परिवार का व्यक्ति हूँ । मैंने पूज्य बापू से मंत्रदीक्षा नहीं ली है । लेकिन उन्हें मन से अपना सद्गुरु मान चुका हूँ ।

मुझे दमे की बीमारी थी । बहुत दवाइयाँ लीं, किन्तु उनसे कुछ भी फायदा न हुआ । एक बार एक साधक भाई के घर पुस्तक लेकर पढ़ी । उसी समय, वहीं पर मैंने एक मनौती मानी कि 'अगर मेरी दमे की बीमारी खत्म हो जायेगी तो मैं प्रसाद चढ़ाऊँगा और 'बडदादा' की १०८ बार प्रदक्षिणा करूँगा । उसके एक महीने बाद मेरी दमे की बीमारी खत्म हो गयी ।

पूज्य बापू की महिमा अपार है । उसका जितना भी वर्णन किया जाये वह कम ही है । अभी तक मैंने मंत्रदीक्षा भी नहीं ली है । फिर भी पू. बापू की कृपा बरस रही है ।

पूज्य बापू के श्रीचरणों में मेरे कोटिशः प्रणाम !

- अजयकुमार चौरसिया
वापी, जिला वलसाड़ (गुजरात)

पूरे गाँव की कायापलट

ग्राम गोन्दरा जो कि छिन्दवाड़ा शहर से २० किलो-मीटर की दूरी पर स्थित है, एक छोटा-सा गाँव है । कुछ दिनों पहले से यहाँ का वातावरण दूषित होने लगा था । किन्तु जब से प. पू. गुरुदेव का अमृतरूपी प्रसाद

छिन्दवाड़ा में आयोजित सत्संग से मिला तब से इस गाँव की काया ही पलट गई ।

पहले इस गाँव के युवक नशे एवं कामवासना से ग्रसित थे । अब इसी गाँव के युवकों के मुँह से सदा हरि ॐ शब्द ही गूँजता रहता है । पूरा गाँव गुरुप्रेरणा एवं हरिभक्ति में मस्त रहता है । यहाँ के सभी लोगों ने छिन्दवाड़ा के सत्संग का आनंद लिया एवं मंत्रदीक्षा भी ली ।

अब इस गाँव में प्रत्येक गुरुवार को प्रभातफेरी निकाली जाती है, जिससे पूरा गाँव 'हरि ॐ' से गूँज उठता है तथा रात्रि में भजन-कीर्तन भी होते हैं ।

इस गाँव के लोगों को पूज्यश्री ने नया जन्म दिया । पूज्य गुरुदेव के श्री चरणों में कोटि-कोटि प्रणाम !

- बबन राऊत

ग्राम-गोन्दरा, जिला-छिन्दवाड़ा (मध्य प्रदेश)

❀

गहन अन्धकार से प्रभु ! परम प्रकाश की ओर ले चल...

एक बार तथागत बुद्ध के पास आकर उनके शिष्य सुभद्र ने निवेदन किया : ''प्रभु ! हमें यात्रा में न भेजें। अब मैं स्थानिक संघ में रहकर ही भिक्षुओं की सेवा करना चाहता हूँ ।

''क्यों ? क्या तुम्हें यात्रा में कोई कटु अनुभव हुआ ?''

''हाँ, यात्रा में मैंने लोगों को तथागत की तथा धर्मसंघ की खूब निन्दा करते सुना । वे ऐसी टीकाएँ करते हैं कि उसे सुना नहीं जा सकता ।''

''क्या इसीलिए तुमने यात्रा में न जाने का निर्णय किया है ?''

''निन्दा सुनने की अपेक्षा यहाँ बैठे रहना क्या बुरा है ?''

''निन्दा एक ऐसी ज्वाला है, जो जगत के किसी भी महापुरुष को स्पर्श किए बिना नहीं रहती । तो उससे तथागत भला कैसे छूट सकते हैं ?'' उन्होंने हँसकर उत्तर दिया ।

जिस तथागत के हृदय में सारे संसार के लिए प्रेम और करुणा का सरोवर छलकता था उनकी भी निन्दा करने में मनुष्य जाति ने कुछ बाकी नहीं छोड़ा था । वस्तुतः इस विचित्र संसार ने जगत के प्रत्येक महापुरुष को तीखा-कड़वा अनुभव कराया है । (क्रमशः)

❀

गुरुभक्तियोग

१. गुरुभक्तियोग दिव्य सुख के द्वार खोलने की अमोघ कुँजी है ।

२. गुरुभक्तियोग के द्वारा सद्गुरु की कल्याणकारी कृपा प्राप्त करना जीवन का लक्ष्य है ।

३. नम्रतापूर्वक पूज्यश्री सद्गुरु के पदारविन्द के पास जाओ । सद्गुरु के जीवनदायी चरणों में साष्टांग प्रणाम करो । सद्गुरु के चरणकमल की शरण में जाओ । सद्गुरु के पावन चरणों की पूजा करो । सद्गुरु के पावन चरणों का ध्यान करो । सद्गुरु के पावन चरणों में मूल्यवान अर्घ्य अर्पण करो । सद्गुरु के यशःकारी चरणों की सेवा में जीवन अर्पण करो । सद्गुरु के दैवी चरणों की धूलि बन जाओ । ऐसा गुरुभक्त हठयोगी, लययोगी और राजयोगियों से ज्यादा सरलतापूर्वक, सलामत रीति से सत्य स्वरूप का साक्षात्कार करके धन्य हो जाता है ।

४. सद्गुरु के दैवी पावन चरणों में आत्मसमर्पण करनेवाले को निश्चिन्तता, निर्भयता और आनन्द सहजता से प्राप्त होता है । वह लाभान्वित हो जाता है ।

५. आपको गुरुभक्तियोग के मार्ग द्वारा सच्चे हृदय से, तत्परतापूर्वक प्रयास करना चाहिए ।

६. गुरु के प्रति भक्ति इस योग का सबसे महत्त्वपूर्ण अंग है ।

७. पवित्र शास्त्रों के विशेषज्ञ ब्रह्मनिष्ठ गुरु के विचार, वाणी, कार्यों में सम्पूर्ण श्रद्धा गुरुभक्तियोग का सार है ।

८. इस युग में आचरण किया जा सके ऐसा, सबसे ऊँचा और सबसे सरल योग गुरुभक्तियोग है ।

९. गुरुभक्तियोग की फिलासफी में सबसे बड़ी बात गुरु को परमेश्वर के साथ एकरूप मानना है ।

(क्रमशः)

मन का अद्भुत सामर्थ्य

एक सुप्रसिद्ध वैद्यराज थे । उन वैद्यराज को किसी बुड्ढे आदमी की तबियत गंभीर होने पर रात्रि को बुलाया गया । वैद्यराज उसे देखने गये । देखने पर उन्हें लगा कि पक्का पान है, पुराना अस्थमा है, फेफड़े कार्य करने से इन्कार कर चुके हैं । रक्तवाहिनियाँ भी चौड़ी हो गयी हैं । शरीर के सब पुर्जे पूरे घिस गये हैं । अब इस बुड्ढे का बचना असंभव है । बहुत-बहुत तो चालीस से अड़तालीस घण्टे निकाल सकता है । वैद्य ने ठीक से जाँच की । सात्त्विक वैद्य था, अच्छी परख थी उसकी ।

बुड्ढे ने कहा : ''अब बताओ, मेरा क्या होगा ? खाई लगती नहीं, दो साल से खटियाँ पर पड़ा हुआ हूँ ।''

वैद्य ने कहा : '' चिन्ता मत करो । अभी मैं जाता हूँ । दवाई भी भेज देता हूँ और विवरण भी भेज देता हूँ ?''

वैद्य अपने अस्पताल की ओर लौटे । रास्ते में उन्हें याद आया कि एक सेठ का लड़का, जो दवाइयाँ मँगाता है, उसे भी जरा देखता जाऊँ । वैद्य ने जाकर उस युवक को देखा । युवक बिस्तर पर कराह रहा था । वैद्य से बोला : ''मेरी तबियत खराब है । मुझे कमजोरी है । क्या पता कब ठीक होऊँगा ?''

वैद्य ने कहा : ''चिन्ता की बात नहीं है, ठीक हो जाओगे । भगवान पर भरोसा रखो । तुमको वहम ज्यादा है, वहम निकाल दो ।''

युवक बोला : ''मुझे रोग कौन-सा है, यह तो बताओ ।''

वैद्यराज ने कहा : ''मैं अभी जाता हूँ । अपने औषधालय से पूरा विवरण लिखकर तुमको चिट्ठी भी भेजता हूँ और दवाई भी भेजता हूँ ।''

वैद्यराज ने औषधालय जाकर दो विवरण बनाये और दोनों की दवाइयाँ भिजवाई । किन्तु जो चिट्ठी और दवाई जवान को देनी थी वह बुड्ढे को मिली और जो बुड्ढे को देनी थी वह जवान को मिल गयी । बुड्ढे के लिए तो लिखा था : ''शरीर का कोई भरोसा नहीं है । पद का भी कोई भरोसा नहीं है । सारे पद शरीर पर आधारित हैं । जितना हो सके हरिस्मरण करो और अपनी धन-सम्पत्ति सन्मार्ग पर वितरित करने के लिए तुम्हारे में थोड़ी शक्ति आ जाये, ऐसी उत्तेजक दवा देता हूँ । शरीर तो किसीका सदा रहा नहीं । भगवान हरि ही तुम्हारी शरण है, अंतिम गति है । संसार में अब तुम्हारे ज्यादा दिन नहीं हैं । एकाध दिन के ही तुम मेहमान हो ।''

जवान ने ज्यों ही चिट्ठी पढ़ी त्यों ही ऐसा ढल पड़ा कि फिर उठ न सका । करवट बदलने के लिए भी पत्नी को बुलाता था । रातभर चीखा - चिल्लाया ।

जवान ने ज्यों ही चिट्ठी पढ़ी त्यों ही ऐसा ढल पड़ा कि फिर उठ न सका । करवट बदलने के लिए भी पत्नी को बुलाता था । रातभर चीखा चिल्लाया । सुबह होते-होते वैद्यराज को बुलाने को आदमी गये : ''युवक की हालत गंभीर हैं, आप चलिये ।''

वैद्यराज ने कहा : ''गंभीर कुछ नहीं है । अब मेरे आने की जरूरत नहीं है, मैं कल देखकर आया हूँ । अभी मेरे पूजा-पाठ का समय है ।''

तब लोगों ने जाकर कहा कि, वैद्यराज बोलते हैं कि अब मेरे आने की जरूरत नहीं है । यह सुनकर युवक को लगा की सचमुच अब मैं जानेवाला हूँ तो वैद्यराज आकर क्या करेंगे ? उसकी तबियत और ज्यादा खराब हुई । दोपहर तक तो उसकी ऐसी हालत हो गई कि मानो अब मरा, तब मरा ।

इधर वैद्यराज को हुआ कि आदमी पर आदमी आ गये हैं, अतः जरा देखकर आयें । जाकर देखते क्या हैं कि वह जवान, जिसकी कल तो हालत ठीक-ठाक थी, आज उसे क्या हो गया ?

युवक बोला : ''आप ही ने तो कल कहा था कि एक - दो दिन के मेहमान हो । रात को आपकी चिट्ठी पढ़ने से तो फिर मेरी तबियत और अधिक खराब हो गई और मृत्यु ही दिखती है । मैं मर जाऊँगा वैद्यराज ! मैंने तो अपने सम्बन्धियों को, ससुराल वालों को

टेलिग्राम दे दिया । आपके पैर पकड़ता हूँ । मैं लिखकर देता हूँ, मैं वचन देता हूँ कि मेरी धन-संपत्ति आपको ही अर्पण करूँगा । मुझे मृत्यु से बचाकर ठीक कर दो ।''

वैद्य ने कहा : ''किन्तु तुम मर कहाँ रहे हो ।''

युवक बोला : '' मैं एक-दो दिन में मर जाऊँगा, ऐसा आपने ही तो विवरण लिखकर भेजा है ।''

वैद्य ने कहा : '' नहीं.. नहीं... चिट्ठी तो बताओ जरा ।''

वैद्य ने चिट्ठी पढ़ी तो खूब हँसे और बोले : ''यह तो अस्सी साल के बुड्ढे के लिए है । मेरे आदमी ने बेवकूफी की कि उसकी चिट्ठी तुझे दे दी । मेरी गलती हो गयी । अब ऐसे आदमी के द्वारा विवरण नहीं भेजा जायेगा । मेरी गलती हो गयी भैया! यह तो कल मैं जिस मरणोन्मुख बुड्ढे को देखकर आया था उसका विवरण था और उसके लिए उत्तेजक दवाइयाँ थीं । तुम्हारे लिए उत्तेजक दवाई नहीं, तुम्हारी तो अलग थी ।''

वैद्य ने कुछ विश्वास की बातें सुनाई, तब वह उठकर खड़ा हो गया । बोला : ''ऐसी बात है ?''

वैद्य ने कहा : '' हाँ, हाँ, सचमुच ।''

वह युवक खाना आदि खाकर बोलता है : ''चलो, अब उस बुड्ढे का हाल देखकर आते हैं कि उसका क्या हुआ ?''

कल तक तो वह युवक बीमार पड़ा था, करवट नहीं बदल पा रहा था । करवट बदलने के लिए किसीके सहयोग की जरूरत थी । लेकिन गहरे मन में इतना सामर्थ्य है कि ढले हुए शरीर को जीवन दे सकता है और जिंदे शरीर को ढाल सकता है । तुम मन में जैसा संकल्प करो वैसा शरीर में घटित हो जाता है ।

युवक और वैद्य गये बुड्ढे के पास । वैद्य ने देखा कि इसका बिस्तर तो पहली मंझिल पर रहता था, अब नीचे कैसे आ गया ? देखा तो बुड्ढा रसोईघर में रोटी और दूध खा रहा था । वह वैद्य को देखकर बोल उठा : ''वैद्यराज आपका भला हो । हे मेरे वैद्यराज भगवान ! आपकी दवाई में क्या तो असर था ? आपका लिखा हुआ विवरण पढ़ा कि मुझे कोई खास रोग नहीं है । जरा कमजोरी है और नाहक मैं वहम में फँसा हूँ तो सचमुच मैंने वहम छोड़ दिया और मुझमें शक्ति आ गई । सीढ़ी उतरकर खाने को आ गया हूँ ।''

तब वह युवक बोलने को जा ही रहा था कि चाचा ! वह विवरण तो मेरा था । परन्तु उसी समय वैद्यराज ने उस युवक को चिकोटी भर दी कि चुप रह अब । इसका तो काम बन गया । वैद्यराज ने बात बदली ।

बुड्ढा बोला : ''वैद्यराज ! दो साल से मैं दवाइयाँ कर रहा था । ऐसे लल्लुपंजु वैद्यों के चक्कर में था कि बीमार ही बीमार रहा । तुम्हारे जैसे वैद्य की दवाई अगर पहले से करता तो इन दो सालों तक मुझे खटिया पर नहीं रहना पड़ता, वैद्यराज !''

जवान हँस रहा है, वैद्यराज चुप करा रहे हैं । जवान को वैद्यराज समझा रहे हैं कि मरने वाला भी अभी थोड़ा स्वस्थ हो रहा है । जबकि तू तो पहले से ही स्वस्थ था ।

जो व्यक्ति मृत्युशैया पर था वह तीन महीने और जिया । आदमी जैसा-जैसा सोचता है, वैसा-वैसा बन जाता है । जो नकारात्मक सोचता है, घृणात्मक सोचता है, उसको घृणा और नकारा ही मिलता है । जो स्वीकारात्मक सोचता है, धन्यवादात्मक सोचता है, 'कर लूँगा, हो जायेगा...' ऐसा सोचता है उसके बिगड़े हुए काम भी बन जाते हैं । ऐसा आपके मन में अद्‌भुत सामर्थ्य छुपा है ।

गहरे मन में इतना सामर्थ्य है कि ढले हुए शरीर को जीवन दे सकता है और जिंदे शरीर को ढाल सकता है । तुम मन में जैसा संकल्प करो वैसा शरीर में घटित हो जाता है ।

> किसी भी अवस्था में मन को व्यथित मत होने दो । आत्मा पर विश्वास करके आत्मनिष्ठ बन जाओ । निर्भयता तुम्हारी दासी बनकर रहेगी ।

संस्था-समाचार

फरवरी-मार्च-अप्रैल इन तीन महीनों में पूज्यश्री की अमृतवाणी भारत के अनेक प्रदेशों में एक साथ पहुँच गई। गुजरात के पश्चिमी छोर धोराजी से भारत के म.प्र. में स्थित रायपुर तक, वैसे ही एक हफ्ते बम्बई में तो दूसरे हफ्ते दिल्ली में पूज्यश्री की अमृतवाणी का गगनभेदी शंखनाद गूँज उठा। दिनांक १० से १३ फरवरी तक धोराजी (जिला-राजकोट) में पूज्यश्री के सत्संग समारोह का आयोजन हुआ दिनांक १५ से १८ फरवरी तक महाराष्ट्र के गोंदिया में और दिनांक १९ से २२ तक मध्य प्रदेश के रायपुर में अभूतपूर्व सत्संग-समारोह आयोजित किया गया। स्थानीय सिंधी समाज ने तो इस अगम-निगम के औलिया का अनुपम लाभ लिया। यहाँ सिंधी समाज के लिए पू. बापू सिंधी समाज के गौरव थे एवं गुजराती समाज के लिए अपनी जन्मभूमि गुजरात का गौरव थे। इसके अलावा सबके लिए ये संत भारत भूमि के अनोखे लाल थे जिन्होंने समग्र विश्व में भक्ति, ज्ञान और योग की त्रिवेणी बहायी है।

दिनांक २५ फरवरी को पूर्णिमा के दिन भक्तों को पूज्यश्री के दर्शन अहमदाबाद आश्रम में हुए। दिनांक २८ फरवरी से २ मार्च तक पाली (राजस्थान) में पूज्यश्री के सत्संग-समारोह का आयोजन हुआ।

दिनांक ३ मार्च को जोधपुर में नवनिर्मित आश्रम का उद्घाटन हुआ। दिनांक ६ से १० मार्च तक जयपुर में सत्संग-समारोह हुआ। सवाई मानसिंह स्टेड़ियम के मैदान में विराट जनमेदनी ने पूज्यश्री के आत्मोद्धारक दिव्य सत्संग का लाभ लिया।

राजस्थान सरकार के मुख्यमंत्री श्री भैरवसिंह शेखावत पूज्यश्री के दर्शन-सत्संग के लिए दो-तीन बार सत्संग में पधारे। वे पूज्यश्री के सत्संग एवं सान्निध्य से इतने अधिक प्रभावित हुए कि जब पूज्यश्री ने जयपुर से विदा ली तो वे जयपुर से आगे कितने ही किलोमीटर दूर तक विदा देने आये। उनके परिवार ने बिना किसी विशेष व्यवस्था की माँग किये एक सामान्य श्रद्धालु की तरह पूज्यश्री के सत्संग का प्रतिदिन श्रवण किया एवं धन्य हुए।

दिनांक १२ से १५ मार्च तक कोटा में आयोजित सत्संग-समारोह में भी मुख्यमंत्री पूज्यश्री के दर्शन करके लाभान्वित हुए।

दिनांक १६ मार्च की सुबह को पूज्यश्री विशेष विमान द्वारा कोटा से इन्दौर पहुँचे एवं शाम को राजपुरा (जिला-धार) में एक राममंदिर का भूमिपूजन किया। उस प्रसंग पर एक विराट शोभायात्रा इस गाँव में निकली थी, जिसमें हजारों नर-नारी कीर्तन की धून में, हरिरस की मस्ती में मस्ताने बन गये।

दिनांक १७ एवं १८ मार्च के दिन अमझेरा (जिला-धार) में पूज्यश्री के सत्संग समारोह का आयोजन हुआ। छोटे-से नगर में पहली बार पूज्यश्री के दर्शनार्थ-श्रवणार्थ उमड़ा अपार जनसमाज और छोटा पड़ता सत्संग-मंडप एक कुंभनगरी की याद दिला रहा था। कोई भी घर सत्संगी मेहमानों की भीड़ से खाली न था और सत्संग के समय प्रत्येक घर पर ताले लटक रहे थे। दिनांक १८ मार्च को सत्संग मंडप में हरिभक्तों पर हवाईजहाज द्वारा पुष्पवृष्टि भी की गई। उस दिन आदिवासियों को भोजन भी कराया गया। ऐसा ही माहौल दिनांक १९ से २१ मार्च तक मनावर में रहा। इन्हीं दिनों की बीच नवनिर्मित आश्रम का उद्घाटन हुआ।

दिनांक २५ से २७ मार्च तक सुरत के आश्रम में वेदांत शक्तिपात साधना शिविर का आयोजन हुआ। होली के अवसर पर इस साधना शिविर में आज तक आयोजित शिविरों की अपेक्षा बहुत अधिक संख्या में साधक उमड़ पड़े थे। केवल गुजरात के ही नहीं, अखिल भारत के प्रत्येक राज्य एवं अमेरिका-कनाड़ा-इंग्लैण्ड-दुबई-हाँगकाँग से भी कई साधक यहाँ आ पहुँचे थे।

मौन मंदिर : गुरुमंत्र प्राप्त किये हुए साधकों के लिये एक हफ्ते तक मौन साधना के लिए अहमदाबाद, सुरत, पंचेड़, भावनगर के आश्रमों में मौनमंदिर चालू हैं। महिलाओं के लिए अहमदाबाद के आश्रम में भी मौनमंदिर चलते हैं। इसके अलावा स्थानीय महिला साधिकाओं के लिए इन्दौर में अंजलि अजय शाह के यहाँ (२/६

मनोरमा गंज, फोन : ४९०८१०) एक मौनमंदिर चल रहा है। दूसरा पार्वतीबहन पटेल के यहाँ (७३/७४ सांई आशिष सोसाईटी, विभाग-२, ताड़वाड़ी, रांदेर रोड़, सुरत-२, फोन : ८४६५०) महाशिवरात्रि के दिन से प्रारंभ हुआ है। मौनमंदिर में बैठनेवाली बहनों को भोजन, अल्पाहार, फल, दूध वगैरह की व्यवस्था अंदर ही उपलब्ध करायी जाती है। एक हफ्ते तक दरवाजा बाहर से बंद रहता है। अंदर साधक जप और परमात्मा के ध्यान में गहरे उतर कर दिव्य अनुभूतियाँ करता है।

रामटेकरी, सुदामानगर, मंदसौर में प्रत्येक बुधवार एवं रविवार को दोपहर १-३० से ४-०० बजे तक आसारामायण पाठ, कीर्तन एवं ऑड़ियो सत्संग पिछले चार महीनों से नियमित चल रहा है।

दिनांक ६-३-९४ के दिन सुरत जिले के निझर गाँव में प्रकाशा के साधकों एवं निझर गाँव तथा आसपास के गाँवों के साधकों ने मिलकर एक भव्य प्रभातफेरी निकाली, हकीकत में वह एक विशाल शोभायात्रा ही थी। सुबह के ६ बजे से दोपहर के १२-३० तक निकली हुई इस संकीर्तन यात्रा में गाँव के युवक, बालक एवं श्रद्धालु भाई-बहन जुड़े थे। जगह-जगह पर, मोहल्ले-मोहल्ले में मंगल आरतियों का आयोजन किया गया। निझर नगरी के इतिहास में सर्वप्रथम बार ऐसी भव्य संकीर्तन यात्रा निकली थी। हनुमान मंदिर के पास के विशाल मंडप में इस प्रभातफेरी की पूर्णाहुति हुई। इस अवसर पर भोजन-प्रसाद का भण्डारा किया जिसमें भाविक भक्तों के अलावा आदिवासियों को भी भोजन-प्रसाद का लाभ दिया गया। रात्रि को राममंदिर के चौक में विडियो सत्संग का आयोजन भी रखा गया। वहाँ सत्साहित्य का वितरण एवं गाँव की गली-गली में दीवालों के ऊपर पूज्यश्री के अमृतवचनों को लिखा गया था।

प्रकाशा आश्रम से संबंधित नीचे के गाँवों में साप्ताहिक विडियो सत्संग रात्रि के ८-३० बजे से चल रहे हैं :

(१) शहादा में यशवंत सिनेमा के पास हर गुरुवार। विद्याविहार कॉलोनी में हर सोमवार।

(२) मनौली (तहसील शहादा) में हर सोमवार।

(३) ब्राह्मणपुरी (तहसील शहादा) में हर मंगलवार

(४) सुलवारा (तहसील शहादा) में हर बुधवार।

(५) खेतिया (म. प्र.) में हर शनिवार श्रीराम मंदिर में।

(६) पानसेमळ (म. प्र.) में हर शनिवार श्रीराम मंदिर में।

(७) मेद्राणा (म. प्र.) में हर गुरुवार श्रीराम मंदिर में।

(८) डोन्डायचा (तहसील शहादा) में विठ्ठल मंदिर में हर गुरुवार।

(९) धोड़का के कालेश्वर मंदिर में हर शनिवार।

(१०) नंदुरबार में गणपति मंदिर में हर शनिवार।

(११) विसरवाड़ी (तहसील नवापुर) में हनुमान मंदिर में हर बुधवार।

टिप्पणी : विडियो सत्संग के लिए विडियो कैसेट लायब्रेरी, संत श्री आसारामजी आश्रम, प्रकाशा का संपर्क करें।

महिला समिति, उज्जैन द्वारा राधाकृष्ण मंदिर बहादुरगंज में प्रति रविवार को कीर्तन एवं विडियो सत्संग का कार्यक्रम एवं समय-समय पर प्रभातफेरी निकाली जाती है। आगामी दिनों में श्रीगंज एवं सिन्धी कॉलोनी धर्मशाला में विड़ियो सत्संग का आयोजन होगा एवं गर्मियों में प्याऊ एवं निःशुल्क छाछ-केन्द्र शुरू किया जायेगा।

कोटा, सुरत एवं अन्य कई जगहों पर पू. बापू के साधकों ने निःशुल्क छाछ-केन्द्र एवं प्याऊ खोले हैं। इस वर्ष भी आदिवासी इलाकों में संत श्री आसारामजी आश्रम की ओर से अन्न, वस्त्र एवं दक्षिणा उदार हाथ से बाँटी जायेगी एवं छाछ-केन्द्र चलाये जायेंगे।

पू. बापू के सान्निध्य में धूलेण्डी का उत्सव खूब धूमधाम से मनाया गया। हजारों साधकों ने घण्टों तक पूज्यश्री के पावन सान्निध्य में शरीर, आँख एवं त्वचा के लिए हानिकारक रासायनिक रंग नहीं, परंतु पलाश के पुष्प एवं केसर के सात्त्विक प्राकृतिक रंगों से धुलेण्डी का मजा लिया। पूज्यश्री के हाथों से फुहारे द्वारा छींटे

जाते रंग, तालियों की गगनभेदी गड़गड़ाहट एवं हरिकीर्तन की झड़ी... होली-धूलेण्डी का वास्तविक आनंद तो उन्होंने ही लिया, जो वहाँ थे। बाकी के तो क्या जानें? यह तो वे ही जानें जो अनुभर करें ...!

दिनांक २८ से ३० मार्च तक विद्यार्थी तेजस्वी तालीम शिविर का आयोजन भी सुरत आश्रम में ही हुआ।

दिनांक २ से ६ अप्रैल तक पाँच दिन के लिए नासिक (महाराष्ट्र) में पूज्यश्री के सत्संग समारोह का आयोजन हुआ। प्रथम दिन ही पूज्यश्री के मंडपप्रवेश के समय मराठी रिवाज के अनुसार पूज्यश्री का स्वागत किया गया। शिवाजी महाराज जैसी पगड़ी पहनाई गयी। आगे-आगे भालेवाले युवक चल रहे थे। पूज्यश्री के व्यासपीठ पर आसीन होने के बाद हिन्दी एवं मराठी में स्वागतगीत एवं प्रार्थना गीत गाये गये।

भगवान राम की पावन भूमि नासिक में सर्वप्रथम बार इतनी बड़ी संख्या में जनमेदनी एकत्रित हुई थी कि गोल्फ क्लब मैदान पर बाँधा गया विशाल मंडप भी छोटा पड़ गया। लोगों ने बाहर खड़े रहकर भी प्रेमामृत पिलाने वाले, हरिरस से सराबोर करने वाले, अगम-निगम के औलिया पू. बापू की अमृतवाणी को सुनते रहे। आखिर में विदाई की वेला में तो सबके हृदय भर गये थे।

नासिक के संसद-सदस्य श्री डॉ. वसंतराव पवार भी पूज्य बापू का हार्दिक स्वागत करके, अमृतवाणी सुनकर धन्य हुए। पू. बापू की अमृतवाणी मानवमात्र के विकास का एक ऐसा अनोखा आश्चर्य है कि महाराष्ट्र हो या गुजरात, सिंधी हो या हिंदी, सत्तावाले पक्ष के हों या विरोधी पक्ष के, इन संत के सान्निध्य में सभी आ जाते हैं एवं सभी को अलख के औलिया से आनंद-अमृत मिल जाता है।

दिनांक १० से १३ अप्रैल तक अहमदाबाद आश्रम में वेदांत शक्तिपात साधना शिविर का आयोजन हुआ। हजारों साधकों ने प्राणिमात्र के परम हितैषी पूज्यपाद श्री सद्गुरुदेव की अनुभवसंपन्न वाणी एवं विद्युन्मय संक्रामक सान्निध्य का अद्भुत लाभ लिया। इन चार दिनों में जीवन में अनोखी ताजगी, अद्भुत उन्नति, अपूर्व भगवत्प्रेम का सबको अनुभव हुआ।

दिनांक १५ से १८ अप्रैल तक चार दिन के लिए दाहोद (पंचमहाल, गुजरात) में सत्संग समारोह का आयोजन हुआ। चार दिनों में दाहोद में भक्तिरस की ऐसी तो बाढ़ आयी कि पूरा दाहोद नगर एक ही सत्संग मंडप में हरिरस की वर्षा में भीगने के लिए उमड़ पड़ा। आसपास के गाँवों, शहरों के भक्त भी उमड़ पड़े थे। एक अभूतपूर्व आध्यात्मिक समारोह का आयोजन इस दाहोद नगरी में हुआ।

पूज्यश्री के अन्य सत्संग-कार्यक्रम

१. बम्बई में गीता-भागवत सत्संग समारोह

दिनांक २० अप्रैल १९९४ शाम ५ से ७
दिनांक २१ से २५ अप्रैल १९९४
सुबह ९ से ११ शाम ५ से ७
स्थान : क्रॉस मैदान, धोबी तालाब, बम्बई।

२. दिल्ली में विश्वशांति सत्संग समारोह एवं पूज्यश्री का जन्म-महोत्सव।

दिनांक : २९ अप्रैल से ४ मई १९९४
सुबह ८-३० से १०-३०
शाम : ४-३० से ६-३०
स्थान : लाल किला मैदान, दिल्ली।

सदस्यों के लिए खास सूचना

(१) शुल्क भरते समय म.ओ. फार्म में, संदेशस्थान पर अपना पूरा पता, पिनकोड़ नंबर, ग्राहक नंबर एवं कब से सदस्यता का नवीनीकरण करना है, इसका उल्लेख अवश्य करें। (२) कार्यालय के साथ पत्रव्यवहार करते समय अपना नाम व पूरा पता एवं ग्राहक नंबर अवश्य लिखें। (३) 'ऋषि प्रसाद' का सदस्य शुल्क केश, डिमाण्ड ड्राफ्ट अथवा म.ओ. के रूप में ही स्वीकार किया जाता है। चेक स्वीकार नहीं किये जाते।

Registered with Registrar of Newspapers for India Under No. 48873 / 91.

अनुभव की गहराइयों को स्पर्श करके आनेवाली अमृतवाणी का श्रवण करते हुए पुण्यात्माओं के बीच सरल स्वभाव, उत्तम विचारवाले, वेदान्त के उन्नत विचारों में गद्गद् होते हुए भारत सरकार के ग्रामीण विकास राज्यमंत्री श्री उत्तमभाई पटेल पुष्पहार से पूज्य बापू का अभिवादन कर रहे हैं।

राजस्थान सरकार के मुख्यमंत्री श्री भैरोसिंह शेखावत सहपरिवार आकर जयपुर के सत्संग समारोह में जनता जनार्दन के साथ बैठकर पूज्यश्री की अमृतवाणी का श्रवण कर रहे हैं। उनका समग्र परिवार सादगी एवं सज्जनता से सत्संग मंडप में आकर जहाँ कहीं भी नम्रतापूर्वक बैठ जाता था। चार दिन तक सत्संग समारोह के आयोजकों को पता तक न चला कि मुख्यमंत्री का परिवार इस प्रकार सत्संग का रसपान कर रहा है। मुख्यमंत्री श्री भैरोसिंह शेखावत ने दो तीन बार जयपुर में एवं एक बार कोटा में पूज्यश्री के दर्शन एवं सत्संग का लाभ लिया।